RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 4 अंक 3 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका
जनवरी 2021

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद

कैसा हो शहर का मुखिया ?

राजतंत्र में राजा दोषी, लोकतंत्र में कौन ?

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

Broadening the vision...
Deepening the Roots...
National Electrol Reform Movement
राष्ट्रीय चुनाव सुधार ''स्वर्णिम भारत अभियान''
''सत्यमेव जयते''
STRENGTHENING MODERN LEADERSHIP...
राजतन्त्र में राजा दोषी
लोकतन्त्र में कौन ?
VOTE INDIA
GENERAL ELECTION

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-18138

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सम्पादकीय

सोच समझकर अपना वोट दो

नगर निकाय चुनाव प्रक्रिया शुरू होने के साथ ही भाजपा, कांग्रेस व निर्दलीय प्रत्याशियों ने नामांकन भरने के साथ ही अपने अपने समर्थन में मतदाताओं को रिझाने की तैयारी कर ली है। कुछ पुराने प्रत्याशी फिर भाग्य आजमा रहे हैं, तो कई नए चेहरे भी चुनावी मैदान में है, जिसमें नए- पुराने व निर्दलीय प्रत्याशी अवसर देखकर मुखोटा बदलकर जनता के सामने आने लगे हैं। लोकतंत्र में हर व्यक्ति का वोट अमूल्य है और सोच, समझकर वोट देना चाहिए। चाहे भाजपा- कांग्रेस का हो या निर्दलीय उम्मीदवार। मगर वह शिक्षित हो, जो जनता के बीच में नियमित आता है, समस्या सुनता हो, जनहित के लिए सदैव कार्य करता हो और स्वच्छ छवि वाले को ही वोट देकर अपना नेता चुनना होगा, तभी अपने गली- मोहल्ले से लेकर शहर का समग्र विकास होगा और आमजन को न्याय भी मिलेगा।

वोट देने से पहले यह जरूर देखें कि अपना नेता पढ़ा-लिखा और स्वच्छ छवि वाला हो, चरित्रहीन न हो, राजनीति को समय देता हो, आमजन की सुनता, विकास का विजन हो, ऐसे ही व्यक्ति को चुनें, ताकि आपका वोट देना सार्थक होगा। निष्ठा और ईमानदारी से शहर के विकास करवाने वाले हो, भ्रष्ट्राचार, कमीशनखोरी का कलंक न हो और भूमाफिया न हो। परिवार में पति या पत्नी सरकारी नौकरी में हो, ऐसे व्यक्ति को भी वोट न दें और पार्षद के बहाने ठेकेदारी करने वाले स्वार्थसिद्धि नेताओं को भी वोट देने से बचना चाहिए।

जो भी वोट मांगने आए, उनका जन एजेंडा मांगे कि आखिर वे अगले पांच वर्ष में क्या काम करवाएंगे। उनका घोषणा पत्र क्या है। राजसमंद में मेडिकल कॉलेज, नौचोकी से श्री द्वारकाधीश मंदिर तक रिंग रोड, झील का संरक्षण, एरिगेशन व नौचोकी उद्यान का उत्थान, पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास सरीखे कोई ठोस प्रयास करें। इस तरह के जन एजेंडे के साथ प्रत्याशी शपथ लें कि मैं तन, मन से जनसेवा करुंगा।

अतिथि सम्पादक

भगवत शर्मा
सचिव, नगर
विकास मंच कांकरोली

Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** कैसा हो शहर का मुखिया — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** राजतंत्र में राजा दोषी, तो लोकतंत्र में कौन ? — पेज - 9
3. **राजप्रशस्ति महाकाव्य :** बाइसवां- तेइसवां सर्ग — पेज- 10
4. **राइजिंग अवेयरनेस :** न्यू बिगनिंग इज ऑलवेज गुड — पेज- 11
5. **साहित्य चर्चा :** गजलों का शहजादा, गीतों का सम्राट — पेज - 12
6. **नवप्रेरणा :** पल नव, वर्ष नव, हर्ष नव — पेज - 14
7. **तीखी मिर्ची :** मौसमी ईमानदारी — पेज - 16
8. **व्यंग्य :** वैवाहिक लग्न इन कोविड काल — पेज - 17
9. **मेरा गांव, मेरे लोग :** मोहनलालजी साहू — पेज - 18
10. **मेवाड़ गौरव :** महाराणा पद्मिनी- सूर्यदेव : निर्णायक संवाद — पेज - 22
11. **व्यंग्य :** हमारे भारत की पहचान, बेचारा लाचार किसान — पेज - 24
12. **टेक्नीकल विंडो :** 5 जी तकनीक के दौर में हमारी अहम जरूरत — पेज - 26
13. **व्यंग्य :** मुर्गा है, तो प्याज नहीं — पेज - 28
14. **समसामयिक प्रश्नोत्तरी :** परितोष पालीवाल — पेज - 30
15. **व्यंग्य :** झूठ की आत्मकथा सच की कलम से — पेज - 31
16. **मेवाड़ी चौपाल :** कोरोना रो जबरी जाळ, फस्यो गैरकी गेरुकाल — पेज - 32

कैसा हो शहर का मुखिया ?

नगरपरिषद राजसमंद और नगरपालिका देवगढ़ के हो रहे चुनाव

लोकतंत्र में हर व्यक्ति के लिए वोट एक महत्त्वपूर्ण व अहम अधिकार और हथियार माना गया है। इसी वोट के जरिये सरकार चुनते हैं। योग्य, अनुभवी व विश्वास लायक व्यक्ति को वोट देकर शहरी सरकार की तिजोरी की चाबी निश्चिंत होकर दे सकते हैं। किसी अयोग्य, अपरिपक्व, अनुभवहीन व्यक्ति को अगर शहरी सरकार की तिजोरी दे देंगे, तो हर कोई ठग कर व मूर्ख बनाकर सामाजिक संपत्ति को लूट सकता है। जिसके जेहन में राजसमंद के समग्र विकास की सोच हो, समय हो, जनता से जुड़ाव रखता, सुनता और कुछ कर गुजरने का माद्दा रखता हो, उसे ही वोट दें, ताकि आपके गली- मोहल्ले से लेकर पूरे शहर का विकास हो सकें।

राजसमंद और देवगढ़ शहरी सरकार चुनने से पहले हर व्यक्ति को सोचने- समझने की जरूरत है। शहरी विकास को लेकर भाजपा व कांग्रेस दोनों ही दलों द्वारा कई दावें किए जा रहे हैं और अलग अलग चुनावी घोषणा पत्र भी तैयार किए जा रहे हैं, लेकिन आखिर दोनों शहर में मूलभुत विकास को लेकर ज्या जरूरतें है। इसके लिए आमजन के बीच जाकर चुनावी घोषणा पत्र तैयार करना चाहिए, तभी वास्तविकता पता चलेगी।

छल कपट से ऊपर आने वाला व्यक्ति, साम-दाम, दंड भेद की नीति से, अगर नेता बन जाए तब उसके दोगले चरित्रहीन स्वार्थी स्वभाव से लोगों के हितों का और शहर व जिले का नुकसान कर वह अपनी तिजोरी भरेगा। ऐसे लोगों को बड़े पदों से दूर रखना आवश्यक है। राजनीति में व्यवहारिक सोच, भविष्य को देखने की दृष्टि, परिपक्वता, कुशल प्रशासक, न्याय करने वाला और सबका हितेषी यह आवश्यक गुण किसी भी राजनेता के लिए आवश्यक है। इसके बिना वे सफल और शक्तिशाली नहीं हो सकते। यह गुण हर राजनेता अपने जीवन के शुरुआती दौर में छोटे पदो पद रहते हुए अनुभव से सीखता है तथा प्रधान पद पर पहुंचने के पूर्व इन कलाओं में पारंगत हो जाता है।

कृपया अपना कीमती वोट, कुशल प्रशासक, परिपक्व और जमीन से उपजे लोगों को आगे लाने के लिए उन्हें वोट दें, काबिल लोगों को आगे जाने के लिए समर्थन देना हमारा कर्तव्य है। यकीन मानिए देश का भविष्य उनके हाथों में सुरक्षित रहेगा।

आपके बहुमूल्य कीमती वोट द्वारा अगर आपने नाग और केंचुआ, लोमडी और बिल्ली में से भी किसी एक को अपना शासक चुनना है तो आप सबसे शक्तिशाली को ही चुने। शेर के मुखोटे में छुपी लोमड़ी को शासन करने के लिए आगे ना बढ़ाए। लालची, चालाक और स्वार्थी राजनीतिक लोगों से बचने के लिए आज की नई पीढ़ी को नीति सिखाने वाला महान ग्रंथ पंचतंत्र अवश्य पढ़ना चाहिए। पंचतंत्र की शिक्षा लोगों की असली पहचान करने में हमें मदद करती है।

सभी नेता या राजनीतिक दल और उनके नेता भी एक जैसे नहीं हो सकते। हर दल या नेता एक ही स्तर का घोषित कर देना जायज़ नहीं है। क्योंकि लालबहादुर शास्त्री, अब्दुल कलाम, अटल बिहारी वाजपेयी भी इन्हीं राजनीतिक दलों के नेता रहे हैं। इसलिए हर राजनीतिक दल में अच्छे और बुरे कार्यकर्ता, नेता हो सकते हैं, लेकिन मतदाताओं को अच्छा प्रत्याशी ही चुनना होगा।

आखिर जवाबदेह राजनीतिक नेतृत्व की दिशा क्या हो ?

राजनीति के संसार को वटवृक्ष के नीचे पनप न पाने वाले उर्वर लेकिन मजबूर पौधों के बियावान जंगल की तरह कहा जा सकता है। अधिकांश युवा और उम्रदां समझदारों का कहना है कि इस जंगल में रास्ते कम, पगडंडियां ही पगडंडियां हैं। उलझाव सुलझाव के झाड़ झंखाड़ों के बीच या तो अपना रास्ता खुद बनाइए या आंख बंद कर रास्तों के पिछलग्गू बन जाइए। प्रायः सभी का मानना है कि न पिछलग्गू बनिए, न खुद रास्ता बनाइए। यह विषय उनके पाठ्यक्रम का है ही नहीं।

प्रश्न है कि जिन नागरिकों में नीर क्षीर विवेकी निर्णय करने, नेतृत्व और अपनी बौद्धिक संपदा का उपयोग करने की कूबत है। वे राजनीति के क्षेत्र मे फकत वोट देकर थोपे हुए तथाकथित जन प्रतिनिधियों के कमजोर हाथों में अपना भविष्य क्यों असुरक्षित कर लें ? लोकतंत्र में जनता का नेतृत्व करने का सभी को अधिकार है। चुनाव व्यवस्था सभी को अवसर की समानता के आधार पर यह अधिकार देती है। हमारी विवशता है कि चुनाव जैसी सिद्धांततः संतुलित मौके की व्यवस्था के बीच अवसर लपक लिए जाने वाली व्यवस्था का शिकार हम हो रहे हैं। ये हम वे हैं जो धन बल, युक्ति बल और छल बल से मुक्त दूरगामी, जनाकांक्षी सोच की बात करते हैं।

इलेक्शन रिफोर्म मुद्दा श्रेष्ठ लोगों के लिए इसीलिए अब उनकी अस्मिता, सम्मान का विषय हो गया है। श्रेष्ठ चिन्तन, जमीनी योजना, शुचितापूर्ण क्रियान्विति और जन जन से निरंतर जुड़ाव रिफोर्म की शर्ते हैं, जिनके लिए अब बदलाव की आम आदमी शिद्दत से बाट जोह रहा है। आइए, सोचें कि इसके लिए आखिर क्या किया जा सकता है–

1. अकादमिक रेकार्ड किसी भी चुनाव में अभ्यर्थी होने की प्रथम वरीयता वाली शर्त होनी चाहिए।
2. यह आवश्यक हो कि अभ्यर्थी किसी भी दल का हो, लेकिन अपने क्षेत्र की विकास योजना की समयबद्ध कार्यावली उसके द्वारा चुनाव पूर्व प्रस्तुत किया जाना, उसके लिए वैधानिक अनिवार्यता हो।
3. चुनाव बाद विजयी अभ्यर्थी के लिए उक्त एजेंडे पर आगे बढ़ना जरूरी हो। चुनाव आयोग इसकी मोनिटरिंग, समीक्षा करें और कार्य की स्थिति, गुणवत्ता पर निर्णय ले, वार्निंग, एक्स्प्लेनेशन, चार्जशीट, ऑडिट, पब्लिक सर्वे और पानी सिर से गुजरने पर अभ्यर्थिता सस्पेंड और रिकॉल करने तक पहुंचनी चाहिए। लोकतंत्र प्रणालियों और जन जवाबदेही के प्रति नेताओं के लिए अब स्पष्ट वैधिक प्रावधानों की जरूरत है।
4. राजनीतिक स्वच्छंदता और सत्ता के दुरुपयोग की संभावनाओं को नियंत्रित करने हेतु उच्च स्तरीय निगरानी समितियों का गठन आज चुनाव प्रक्रिया से लेकर विजयी उम्मीदवार को उसकी शक्ति, सीमा, अधिकार, कर्तव्य और संवेदनशीलता का बोध कराए रखने के लिये एक आवश्यक स्थिति है। अराजनीतिक व्यक्तियों की मौजूदा परिस्थितियों में चुनाव, मतदान आदि प्रक्रिया के प्रति उदासीनता के कारणों को तलाशना अत्यधिक जरूरी है। अन्यथा नेतृत्व और लोकतंत्र केवल गौरवान्वित होने के विषय रह जाएंगे।

क्या जनता जनार्दन की उक्त परिकल्पना या हाइपोथिसिस को जमीनी हक़ीकत का जामा पहुंचाने की दिशा में जिम्मेदारों की भूमिका सुनिश्चित की जा सकती है। इसी पर आमजन एवं हर सुधीजन विचार करें।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली

राजतंत्र में राजा दोषी, लोकतंत्र में कौन? तंत्रलोक को लोकतंत्र बनाएगा कौन ?

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लाखों माताओं के लालों ने अपने प्राणों की आहुतियां इसलिए दी थी कि आने वाली पीढ़ियों को गुलामी की जिल्लत भरी जिंदगी नहीं जीनी पड़े, इसलिए भारी जुल्मों, अत्याचारों, रक्तपात को भी हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने सहन किया और कुछ नामी व लाखों अनाम बलिदानों की बदौलत अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना ही पड़ा।

सन् 1857 की क्रांति में 90,000 अंग्रेज मारे गए थे, वो तो हमारे सिंधिया आदि कुछ राजघरानों के कारण ही अंग्रेज़ यहां टिक पाए, नहीं तो 1857 में ही देश आजाद हो जाता। भीषण भारतीय प्रतिरोध को देखते हुए तत्कालीन वायसरॉय ने इंग्लैंड संसद को रिपोर्ट भेजी थी कि अब भारत को बलपूर्वक गुलाम नहीं बनाए रखा जा सकता, हमें भारत छोड़ना ही पड़ेगा। यह सुनिश्चित है।

हम जरा विचार करें कि 1857 से 1947 तक अंग्रेज़ी संसद ने देश छोड़ने के पहले क्या क्या तैयारियां की ?

15 अगस्त 1947 की आधी रात में मात्र 5 लोगों के बीच सत्ता का हस्तांतरण की शर्तों पर किया गया ?

क्यों एक भी अंग्रेज़ी/ विदेशी कंपनी आजादी के बाद भी भारत छोड़कर नहीं गई ? क्यों आज भी देश में बाल गंगाधर तिलक, भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस व महात्मा गांधी के स्वराज की स्थापना नहीं हो पाई ?

जब देश से राजतंत्र चला गया और जनतंत्र की स्थापना हो गई, तो फिर राजनीति क्यों नहीं गई और जनतंत्र में जननित बनाने के लिए राजनीति क्यों होती है ?

क्यों आज भी देश अंग्रेज कालीन कानूनों, शोषण, लाल फीताशाही और पुलिस, सीबीआई- ईडी आदि संस्थाओं के दम पर विरोधियों को जबरन दबाकर जेल में ठूंसने के कार्य किए जा रहे हैं ? आधुनिक भारतीय लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि होने पर भी क्यों लोकसेवक (सरकारी कर्मचारी), तथाकथित जनसेवक (जनप्रतिनिधि) दोनों जनता व जनतंत्र के ऊपर अपने को समझने लग गए हैं और जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को जनता से ही बचने के लिए पुलिस संरक्षण में रहना पड़ रहा है ? आज भी हमारा देश कई सारी अंग्रेज़ी विडंबना ढो रहा है।

सम्मानित पाठकों, ऊपर जो कुछ प्रश्न की और इंगित किया गया है वे बहुत ज्वलंत प्रश्न हैं, जो आज भी गुलामी के दिनों की यादों को समय समय पर पुन: हमारे सामने जिंदा खड़ा कर देते हैं। फिर भी हमारा सौभाग्य है कि अंग्रेज़ी कुटिलता से बचते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने इस देश की सत्ता बनाने, बदलने की, देखभाल- निगरानी करने और की जिम्मेदारी प्रथम और अंतिम रूप से आम जनता को दी तथा इस सत्ता की चाबी एक अमूल्य व सर्वाधिक शक्ति संपन्न अधिकार वोट का अधिकार सर्वाधिक कीमती उपहार हमें दिया है, जिसे हम दान करके अपनी शक्ति का हस्तांतरण करते हैं। हमें मतदान की अहमियत को समझना ही पड़ेगा।

चुनाव सुधार एकमात्र मार्ग :

चुनाव लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं बनाने का प्रथम द्वार है। चुनाव एक प्रकार का प्रसवकाल है, जिसमें आने वाली नई व्यवस्था एक शिशु की भांति विकसित होती है और जनता वोट देकर उस शिशु विचार को प्रौढ़ बनाती है (जिताती है)। फिर वही व्यक्ति जनता के कल्याण के लिए 5 साल कार्य करता है। वापस 5 साल बाद जनता उसके कामकाज का निरीक्षण करती है।

जैसा कि कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह बिना समाज के नहीं रह सकता है, लेकिन इस समाज के अंदर आज कई बुराइयां व्याप्त हो गई है, जो मानवीयता को ही निगल रही है। शराब की दुष्प्रवर्ती नई पीढ़ियों को भटका रही है और चुनावों में वोटिंग के अंतिम दिन सर्वाधिक शराब वितरित होती है। यही सत्य तथ्य है। आज हैवानियत इतनी बढ़ गई है कि छोटी छोटी मासूम बच्चियों को हवस का शिकार बनाया जा रहा है, हमारा देश, फुट डालो राज करो... की तर्ज पर धर्म, जाति, वर्गों में बांटा जा रहा है। आज हमारी आंखों के सामने हर समाज, परिवार में राजनीतिक गुटबंदी, आपसी सौहार्द, भाई चारे व सामाजिक ताने बाने को तहस नहस कर रही है। भाई भाई का खून बहा रहे है। जाति जाति में जहां पारंपरिक एकता, सामंजस्य था, वहां आपस में वैमनस्य का बीज बोया जा रहा है। बात केवल आर्थिक भ्रष्टाचार तक सीमित हो तो फिर भी सहनीय है, लेकिन राष्ट्र व समाज की अखंडता व जनता के आपसी प्रेम भाई चारे को खंडित करें और नई पीढ़ी को व्यसनी, हिंसक और जहरीली करें। ऐसी गतिविधियों को हटाया जाना ही परम परम आवश्यक है और यही दर्शन तथा स्वर्णिम भारत नवनिर्माण का संकल्प राष्ट्रीय चुनाव सुधार अभियान गत 2004 से जन्म लेकर लगातार पल्लवित पुष्पित हो रहा है।

चुनाव सुधार एक बहुआयामी पूर्णत: वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं मनोवैज्ञानिक प्रेक्षण व परीक्षण के आधार पर संचालित होने वाला कार्यक्रम है, जिसमें सुधारों के प्रति सामाजिक संस्थाओं, संगठनों मतदाताओं, राजनीतिक दलों और आम मतदाताओं में जनमत जागरण और निर्माण का कार्य किया जाता है।

2004 से सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रत्येक चुनाव में, 2008, 2013 व 2018 के उदयपुर विधानसभा, 2009, 14, 19 के उदयपुर नगर निगम चुनावों में चलकर पलकर बढ़ा यह अभियान प्रथम बार उदयपुर के बाहर प्रभु श्री द्वारकाधीश की नगरी में 'स्वर्णिम राजसमंद नवनिर्माण' के दर्शन को साकार करने 15 से 31 जनवरी तक आयोजित होने जा रहा है।

इसके अन्तर्गत लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के क्रम में चुनाव सुधार कॉन्फ्रेंस के तहत विशिष्ठ विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्यापक चिंतन मनन किया जाएगा। हमारा प्रयास रहेगा कि हम राजसमंद के गौरवशाली उज्ज्वल इतिहास को खोजें। यहां की गौरवशाली संस्थाओं व हस्तियों को जनसहभागिता से विकास करने हेतु सामूहिक चिंतन को प्रेरित करें और सभी शहर के लिए चिंतित, संघर्षरत सक्रिय बुद्धिजीवियों के साथ स्वर्णिम राजसमंद का मास्टर प्लान तैयार करें और 2021-25 तक उसको जनसहभागिता से साकार रूप में लाएं।

साथ ही चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों के सशक्तीकरण के लिए दृष्टिकोण व्यापकत्व एवं जनमत की समझ गहरी करने हेतु चरणबद्ध कार्यशाला एवं ऑडियो वीडियो साक्षात्कार, राजनीतिक पदाधिकारियों से वार्ता तथा आम मतदाताओं में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने, परीक्षा दो, परीक्षा लो, सोच समझकर सबसे सही चुनो... कार्यक्रम होगा।

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।

एडवोकेट भरत कुमावत
संयोजक, राष्ट्रीय चुनाव सुधार अभियान
मो. 7976589521

देवगढ़ को विकास की उम्मीदें

अरावली पर्वत मालाओ और सांस्कृतिक धरोहर का अनूठा संगम है राजसमंद जिले का देवगढ़ कस्बा। यह क्षेत्र चित्र शेली के लिए भी विख्यात है। यहां का अतीत कई सुनहरी यादों को समेटा हुआ है, पर वर्तमान में विकास को लेकर जनता को अभी कई उम्मीदें हैं। देवगढ़ नगरपालिका का गठन 1952 में हुआ था। पहले चेयरमैन केसरीमल जैन थे। उसके बाद डॉ. बुलचंद खिलनानी, नाथूलाल डाड, डॉ. बुलचन्द खिलनानी, नाथूलाल डाड, शंकरसिंह किशनावत, मिठ्ठन सिंह पंचोली, खीमी देवी रावत, दामोदर लाल नराणिया तथा इंद्रमल कंसारा रहे। नगरपालिका का चेयरमैन सीधे जनता द्वारा चुने जाने की घोषणा के बाद हुए चुनाव में शोभालाल रेगर चेयरमैन बने। उसके बाद अंजना जोशी देवगढ़ नगर पालिका की चेयरमैन बनी। इस तरह देवगढ़ नगरपालिका में 13 चेयरमैन रह चुके हैं और 14वें नगरपालिका बोर्ड के लिए चुनाव है। इस दौरान जहां खेल प्रेमियों को कुछ सोगते मिली, तो उम्मीदें जनता की अधूरी सी रह गई, जिसको लेकर अब आमजन को नए अध्यक्ष से उम्मीदें है।

बाईपास की राह ताकता देवगढ़

देवगढ़ से गुजरते बड़े वाहनों की वजह से कई दुर्घटनाएं हो चुकी है। बस स्टेंड से लेकर सूरज दरवाजा और गर्ल्स स्कूल होते हुए शास्त्री नगर तक हर वक्त हादसे का खतरा बना रहता है। ऐसे में शहर को बड़े वाहनों की आवाजाही के लिए बाईपास की सख्त जरूरत है।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

देवगढ़ नगरपालिका में महिला अध्यक्ष होने के बावजूद महिला सशक्तिकरण को लेकर कोई ठोस प्रयास नहीं हुए। ऐसे में अब देवगढ़ में महिला सशक्तिकरण की दिशा में स्वरोजगार को लेकर कार्य करने की जरूरत है।

बस स्टैंड पर बढ़ता अतिक्रमण

देवगढ़ नगर की चारो दिशाओ में बढ़ता अतिक्रमण सिर्फ विकास को प्रभावित नहीं कर रहा है, वरन दुर्घटनाओं को बढ़ावा दे रहा है, जिससे आमजन और बाहर से आने वाले राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

राघवसागर स्वच्छ बने और सौन्दर्यीकरण हो

देवगढ़ में धार्मिक एकता, अखंडता व कौमी एकता का संदेश देने वाले राघव सागर तालाब के उत्थान को लेकर ध्यान देने की सख्त जरूरत है। यहां ठाकुरजी भी सरोवर स्नान को आते हैं, तो मोहर्रम पर ताजिये ठंडा करने की रस्म भी यहीं निभाई जाती है। शहर की नालियों की गदंगी इसमें जा रही है। राघव सागर को स्वच्छ बनाते हुए सौन्दर्यीकरण किया जाए तो पर्यटन केंद्र बन सकता है।

बढ़ती आबादी और छोटा बाजार

देवगढ़ शहर में बढ़ती आबादी और दिनोंदिन बढ़ती वाहनों की संख्या के मुकाबले बाजार तंग हो रहा है। बाजार में वाहन पार्किंग को लेकर हमेशा समस्या खलती है। खास तौर से त्यौहारों के दौरान आमजन को काफी परेशानी होती है। पार्किंग के साथ व्यवस्थित बाजार विकसित करने की भी जरूरत है।

छिटपुट व्यवसाय की चौपाटी का अभाव

देवगढ़ शहर में आने वाला हर व्यक्ति चाय, नाश्ता व पेय पदार्थ खाने-पीने के लिए जिस चौपाटी की तलाश करता है, जहां एक ही जगह सभी तरह की स्टालें उपलब्ध हो, मगर ऐसी जगह का अभाव है। इसको लेकर नगरपालिका द्वारा अस्पताल रोड, मुख्य बस स्टैंड के आस पास इस तरह की चौपाटी विकसित की जा सकती है, जिससे कई लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

देवगढ़ की चित्रशैली का करें पुनरुत्थान

चित्रशैली को लेकर देवगढ़ शहर की कभी पहचान हुआ करती थी, मगर प्रशासन की अनदेखी के चलते कलाकारों को तव्वजों नहीं मिली, जिसके चलते चित्रशैली दम तोड़ रही है। इसके उत्थान को लेकर भी ध्यान देने की जरूरत है।

पेयजल का स्थायी समाधान हो

देवगढ़ शहर में पेयजल के स्थायी समाधान को लेकर अब तक कोई ठोस प्रयास नहीं हो पाए। इसलिए नए नगरपालिकमा बोर्ड एवं भावी चेयरमैन से अब पेयजल के स्थायी समाधान की खास अपेक्षा है। इसके लिए सोपरी बांध से पानी लाया जा सकता है।

महेश पालीवाल
द कॅरियर कम्प्यूटर, देवगढ़
मो. 94147-88422

कवर स्टोरी

राजसमंद को भावी सभापति से उम्मीदें

नगरपरिषद राजसमंद के निवर्तमान सभापति सुरेश पालीवाल के कार्यकाल में निस्संदेह राजसमन्द में कई बेहतरीन कार्य हुए हैं। जिनमें राजनगर- कांकरोली में सब्जी मण्डी, राणा राज सिंह पेनोरमा, अमर जवान ज्योति पार्क के साथ शहर में कई मुख्य सड़के चौड़ी हुई और साठ फीट मार्ग खुला तो शहर में सुगम आवजाही बनी। इसके बावजूद भी शहर को नए सभापति से काफी उम्मीदें रहेगी। वर्षों पूर्व बनी राजसमन्द झील को अब संरक्षित करने की आवश्यकता है। पाल पर कई जगह चूहों ने बिल कर पाल को कमजोर कर दिया है। इसलिए इसे मरम्मत करने की आवश्यकता है।

बाहर से श्री द्वारकाधीश मन्दिर में श्री प्रभु के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की आवाजाही बनी रहती है। साथ ही जिला जिला मुख्यालय होने से गांवों से भी कई लोग शहर में आते हैं, मगर शहर में एक भी पार्किंग स्थल नहीं है, जहां वाहन खड़ा किया जा सकें। इसलिए कांकरोली बस स्टेण्ड या आस पास के क्षेत्र में निशुल्क पार्किंग स्थल की आवश्यकता है।

शहर के मुख्य मार्ग व सब्जी मण्डी के इर्दगिर्द मवेशियों का जमावडा लगा रहता है। सड़क से गुजरते कई राहगीर इनके कारण राह में ही गिर जाते हैं। इसलिए इन मुक्त पशुओं के लिए नगरपरिषद द्वारा गोशाला बनाने की अति आवश्यकता है। इसके लिए पशुपालन विभाग द्वारा 82 लाख के विशेष प्रोजेक्ट की पेशकश भी की, मगर नगरपरिषद द्वारा कोई रूचि नहीं दिखाई जा रही है।

श्री द्वारकाधीश मन्दिर तक पहुंचने का मार्ग भी काफी संकडा है, जिससे श्रद्धालुओं को मन्दिर तक पहुंचने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसलिए नौचोकी पाल से श्री द्वारकाधीश मन्दिर तक सड़क बनाने की जरूरत है।

शहर में एक पुस्तकालय एवं टाउनहॉल की आवश्यकता है। शहर की कालोनियों में गार्डन के लिए आरक्षित जमीनों पर कतिपय लोगों द्वारा कब्जा किया जा रहा है। इसको लेकर भी नगरपरिषद को सख्त कदम उठाते हुए जमीनों को अतिक्रमण मुक्त करते हुए व्यवस्थित पार्क विकसित करने की जरूरत है। शहर में बिजली के तारों का जाल बिछा हुआ है, जिससे हमेशा किसी हादसे का अंदेशा बना रहता है। इसलिए इन बिजली के तारों को भूमिगत करने की आवश्यकता है। झील के बीच स्थित टापू पर उदयपुर के नेहरू उद्यान की तर्ज पर एक गार्डन विकसित करने की आवश्यकता है।

ऐतिहासिक नौचोकी, महाराणा राजसिंह पैनोरमा, झील, अन्नपूर्णा माता मंदिर के आस पास के क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाए, तो न सिर्फ पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि क्षेत्रीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य

तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

बाइसवां सर्ग

राज प्रशस्ति की तैइसवीं शिला में उत्कीर्ण बाइसवां सर्ग इन पंक्तियों के लेखक सहित उन मेवाड़वासियों को इस पुण्यधरा के प्रति स्व प्रेरित नमन के लिए बाध्य कर देगा, जो इस तथ्य को भलीभांति समझते हैं कि वैदेशिक इतिहासकार किस तरह से इतिहास लेखन में आततायी विदेशी शासकों को गौरवान्वित करने के लिए तथ्य और सत्य को जानबुझकर छोड़ देते हैं। कालांतर में वही इतिहास शिक्षा के पाठ्यक्रम का भाग बनकर नई पीढ़ी को स्थायी रूप से भ्रमित बनाए रखता है।

यह सर्ग राणा राजसिंह के पुत्र जयसिंह की दिल्ली यात्रा के उल्लेख और दिल्ली में औरंगजेब से सहज भेंट के प्रसंग से शुरू होता है। इस भेंट की महत्ता को दरकिनार कर लगभग एक वर्ष बाद वि.सं. 1736 में औरंगजेब मेवाड़ पर आक्रमण कर देता है। इसका मुंहतोड़ उत्तर राजनगर, देवारी, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, चावंड, ईडर की रणभूमि में मेवाड़ वंशियों ने दिया। औरंगजेब और उसके पुत्र को मुंह की खाकर अंतत: भागना पड़ा।

राजसमंद और मेवाड़वासियों का कर्तव्य बनता है कि वे बाल और युवा पीढ़ी को इन प्रसंगों से परिचित कराए और यह भी कि इस गौरवगाथा को नौचोकी पर डिस्प्ले किया जाए।

राणेंद्रेण कुमारोथ गजसिंहो बलान्वित: ।
प्रस्थापितो बभंजनाय तद्वैगमपुरं महत् ।।
राष्ट्रत्रयंरूप्यमुद्रालक्षत्रयमथापि वा
दत्त्वैव मेलनं कार्यमया राणेन निश्चतम् ।।44-45।।

गणतंत्र दिवस की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

तैइसवीं सर्ग

मेवाड़ पर मुगल शासक औरंगजेब के आक्रमण का प्रतिकार राणा राजसिंह के पुत्र जयसिंह और उनके भाई व मेवाड़ के प्रजाजन द्वारा पूर्ण विश्वास और वीरता के साथ किया गया। इससे भयभीत औरंगजेब ने तीन राष्ट्र और तीन लाख रजत मुद्राएं देकर संधि प्रस्ताव भेजकर आए अस्तित्व संकट को समाप्त करने का उपक्रम किया। इस समय राणा राजसिंह का स्वर्गवास हो चुका था और देसुरी घाटे और घाणेराव के युद्ध में मुगल सेना को पराजय का सामना करना पड़ा था।

यह संधि मेवाड़ और औरंगजेब के मध्य सम्मानपूर्ण लेकिन दो टूक चेतावनी से भरी थी। गोगुंदा घाटा जहां आप मुगलों की सेना पड़ी हुई है, को आपके पुन: लौट जाने के लिए साफ करा दें या मेवाड़ की सेना द्वारा वहीं आपको घेर लिया जाए, के साथ और मुगल सेनापति दलेल खां द्वारा समर्पण का मानस बनाने के बावजूद छल छद्म करने की कोशिश के, अंतत: झुकना पड़ा और राजसमुद्र के किनारे मुगलिया सल्तनत के प्रतिनिधियों ने महाभाग राणा जयसिंह के समक्ष संधि के बहाने समर्पण कर ही दिया।

जयसिंहो महाभाग्योएवीर: शिविर मागत: ।
अस्यासीद्भाग्यातरूशीघ्रं मेलनंजनतावदत् ।।62।।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

जयवर्द्धन की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

New Beginning is Always Good

Dear Reader

Hope you are enjoying a new beginning! During this time in the world, the pandemic is changing the lives and livelihoods of many people and giving them the new beginnings they never asked for. As difficult as it may be to start over, there is a beauty about new beginnings-

1. Life is always changing so make the most of it.

Each time change happened in our life, we resist it. We would do everything in our power to keep things the way they were. Instead of trying to stop life or control life, we should learn to treat starting over as an adventure. Look at the ups and downs of life like a game and enjoy playing the game of life.

Realize the beauty in starting over because something ends, other things begin.

2. Life is never how we expect it, therefore surrender to it.

We have dreams, goals, and expectations of life. We visualize and imagine the life that we want to have, but then this life doesn't materialize. Problems and obstacles come up. Disappointments and failures set in. Then, instead of embracing our life, we are upset by it and call life unfair. The healthier way to think about life is to surrender to it. If life is a dance partner, we will go with the flow, not dictating how life should dance.

Allow life to lead instead of trying to force life to be a certain way.

3. When life doesn't work out, find a different way to work it.

Beginning can be looked at in two ways-

1. We can look at it like we hit rock bottom and have failed.
2. We can look at it as a learning curve.

If things didn't work out for us, at least we should learn from it.

4. Life is challenging but we can grow from it.

When we have to start over, we may feel like we're starting over from scratch.

Remember we are moving forward when we're at the beginning because there are new opportunities for us to grow. We have the chance to work on our ability to bounce back, to grow emotionally and spiritually.

This new beginning is a chance to become a version of our self that didn't exist before. It is filled with lessons, experiences, and wisdom that we will have for life.

5. Life doesn't have to be perfect to be happy with it.

We don't have to wait for life to be a certain way to be happy. We can be happy as we are. Up or down, ahead or behind, society makes us think that we have to achieve certain goals in life to be happy. If we're not happy now, we're not going to be happy when we get to our destination.

We become happy tomorrow by being happy today. We choose happiness on an ongoing basis so happiness isn't fickle or fleeting. Stay Happy & Enjoy the life.

Manisha Lashkari
Principal, Smart Study International School Nathdwara

ग़जलों का शहजादा शेख अब्दुल हमीद और गीतों का सम्राट त्रिलोकीमोहन पुरोहित

सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में प्रारम्भ से कांकरोली अग्रणिय रहा है। तभी तो कई सालों पहले भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य चतुर्सेन ने अपने साहित्य सर्जन के लिए इसी कांकरोली की धरा को चुना और यहां रहकर कई उपन्यास और कहानियां लिखी। उनके प्रसिद्ध उपन्यास गोली का सर्जन भी इस धरा पर हुआ था, तब से लेकर आज तक अनेकानेक साहित्यकार इस धरा पर अपने साहित्य का सृजन कर इस कांकरोली का नाम गौरवान्वित कर चुके हैं।

सन् 1985 में यहीं के एक और प्रसिद्ध कवि व कथाकार श्री कमर मेवाड़ी और साहित्य के उपासक श्री मधुसूदन पण्ड्या ने कुछ साहित्यिक प्रेमी लोगों को इकट्ठा कर राजस्थान साहित्यकार परिषद नामक एक संस्था की स्थापना की। तब से लेकर आज तक इस संस्था से जुड़े अनेकानेक साहित्यकारों ने विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन कर इस संस्था और कांकरोली का गौरव बढ़ाया है। इस संस्था के लगभग प्रत्येक सदस्य की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है, जिनका साहित्य जगत में उचित मूल्यांकन हुआ है और ये पुस्तकें सराही गई है। राजस्थान साहित्य अकादमी में भी इन पुस्तकों ने इस गांव का गौरव बढ़ाया है।

इसी क्रम में सन् 2020 में शेख अब्दुल हमीद की गज़लों की पुस्तक 'अपनी तलाश में' व श्री त्रिलोकी मोहन पुरोहित के गीतों का संग्रह 'गंध भरी कर्पूरी शपथें' प्रकाशित हुआ है। ये दोनों ही पुस्तकें उर्दू अदब और हिन्दी के महत्व और संस्कृति को उजागर कर रही है।

शेख अब्दुल हमीद की गजलों की यह पुस्तक सचमुच एक हसीन और बेहतरीन शेरों और गज़लों का गुलदस्ता है, जिसे पढ़ते ही साहित्यिक खुशबू ही खुशबू महसुस होती है। पुस्तक की शुरूआत में ही हमीद साहब कहते हैं–

चलता रहा हूं उम्रभर अपनी तलाश में
छोड़ा है मैने अपना घर, अपनी तलाश में।

मुस्कराहट लब पे और दिल में खुशी रखा करो
इस तरह शादाब अपनी ज़िन्दगी रखा करो।

कदम कदम पर बहुत अहतियात रख नांदा
कि बाद जाने के आबरू नहीं आती।

हर एक दिल की उदासी को दूर करना है
ये हौंसला भी हमी को हुजुर करना है।

मां के कदमों में जन्नत ये हदीसे पाक है
कैसे पाएगा ये नेअमत, मां की खिदमत छोड़ कर

मिठास रिश्ते में होती नहीं जहां यारों
मंका तो होता है, पर वो घर नहीं होता।

दिल किसी का दुखाया नहीं, गम किसी को दिया ही नहीं
मैंने माना कि कांटा हूं मैं, पर किसी को चुभा तो नहीं।

ये क्या हुआ, कहां से बीमारी आ गई
फितरत में आदमी के अदाकारी आ गई।

नसीहतों को कहां बेईमान सुनता है
नमाज़ पढ़ता नहीं और अजान सुनता है।

ऐसे न जाने कितने ढेरों शेर इस गज़ल की किताब में हैं, जिन्हें पढ़कर आदमी रूहानी दुनियां में खो जाता है और अपनी ज़िन्दगी के गुजरे सभी लम्हों की यादों में खो जाता है।

त्रिलोकीमोहन के गीत भी ज़िन्दगी के कई आयामों पर केन्द्रीत है, जिन्हें पढ़कर मन कल्पना की उड़ान उड़ता है और सभी झंझटों से मुक्त हो गीतों की ऐसी दुनिया में विचरण करने लगता है, जहां प्यार है, सम्मान है, व्यवहार है, समर्पण है, जिम्मेदारियां है, कर्त्तव्य है, जहां एक दूसरे के दुख दर्द को समझने का माद्दा है। भाई त्रिलोकीमोहन जब इन गीतों का स्वयं पाठ करते हैं, तो

इन गीतों को चार चांद लग जाते हैं। गंधभरी कर्पूरी शपथें त्रिलोकीमोहन की कोई पहली पुस्तक नहीं है। इसके पहले भी कई गीतों की पुस्तकें आपकी साहित्य जगत में आ चुकी है और मान सम्मान पा चुकी है। सचमुच गीतों का यह राजकुमार गीतों को और कितनी ऊंचाईयां देगा, इसका अंदाजा हम इस पुस्तक के गीतों को देखने से मिलता है। जैसे इनके गीतों की कुछ झलकियां –

खोजूं प्रिय पर तुम दिखते हो,
तुमको देखूं खुद दिखता।
बिन कागज ही, बिना कलम के,
अपनी गीता खुद लिखता।
ईंट टोकरी रोड़ा पत्थर,
उसे उठाना दर्द नहीं,
बांसती ये मौसम रोको,
उसे जलाना सहा नहीं।
हंसता खिलता चांद देखता
स्याह जलद के पार
निर्मल जल ले झरना निकले
पर्वत के उस पार
दो डग तेरे भरते ही
खुशियां स्वयं चली आई
बूंद मिली हो धरती से
ज्यों गंध स्वत: ही भर आई ।
चाहा दिल से जिस प्यार को
तारे सा वह दूर हुआ
ज्यों दर्पण को हाथ लगाया
वहीं बिखर कर चूर हुआ ।
पंखुरी से होंट खोलो
प्रेम से दो बोल बोलो
कौनसी सौगंध ले ली
डाली गई कोल खोलो।

ऐसे ही अनेकानेक गीतों के बोल त्रिलोकीमोहन के गीत संग्रह में है। पढ़कर सचमुच आनन्द की अनुभूति होती है और बार बार पढ़ने को मन व्याकुल होता है। ईश्वर गज़ल के शहजादे और गीत के सम्राट को और भी ढेरों गज़लें और गीत लिखने की सृजनशीलता की नियेमत अता फरमावे। आमीन

अफजल खां अफजल
कांकरोली

जयवर्द्धन के व्यंग्यकार विनोद विक्की बिहार विधान परिषद में हुए सम्मानित

बिहार विधान परिषद् सभागार पटना में आयोजित सुधीर सिंह उजाला एवं अशोक तिवारी के संपादन में प्रकाशित होने वाली राष्ट्रीय पत्रिका अलख इंडिया के 5वें स्थापना दिवस समारोह में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाले शिक्षा, कला, साहित्य पत्रकरिता, फिल्म आदि विभिन्न क्षेत्रों के कुल 21 लोगों को सम्मानित किया गया। इसमें खगड़िया के व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की भी शामिल थे। इस सम्मान समारोह में विधान परिषद सभापति अवधेश नारायण सिंह एवं विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा बिहार के पूर्व मंत्री अजीत कुमार सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। इस अवसर पर सम्मान समारोह के अलावा पुस्तक विमोचन और मौजूदा दौर में पत्रकारिता की भूमिका विषय पर चर्चा भी हुई, जिसमें विसध्यक्ष, विप सभापति सहित उपस्थित विद्वानों ने अपने अपने विचार रखें।

विनोद **जयवर्द्धन पत्रिका** के लिए व्यंग्य लिखते हैं। बिहार

के खगड़िया जिले के महेशखूंट बाजार निवासी युवा व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की को व्यंग्य लेखन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें ये सम्मान इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह एवं राज्यसभा सांसद श्री सतीशचंद्र दुबे ने अपनी हाथों से मोमेंटो देकर किया।

पल नव, वर्ष नव, हर्ष नव

हमारा देश विविधताओं का देश है, तो नव वर्ष की परम्पराएं भी विविधता लिए हुए है। यह हमारे भारतवर्ष की सहिष्णुता की नायाब मिसाल है। विविध धर्म के लोगों के अलग अलग दिवस से नए वर्ष की शुरुआत करने से कोई धर्म या पंथ छोटा या बड़ा हो जाए, यह समझ से परे है। सभी का अपना अपना महत्व है।

क्या फर्क पड़ता है - एक स्कूल के विद्यार्थी का विद्यालय समय प्रात: 7 बजे का है, एक कार्यालय कार्मिक के ड्यूटी का प्रारम्भ यदि 9 बजे से है, किसी इण्डस्ट्री में एक श्रमिक का कार्य समय सवेरे 6 बजे, किसी श्रमिक का दिन के 2 बजे, किसी का रात्रि को 10 बजे से प्रारम्भ होता है। किसी विभाग का वार्षिक सत्र 1 जुलाई से प्रारम्भ होता है, किसी का सत्र 1 अप्रेल से प्रारम्भ होता है, किसी व्यापारी का दीपावली से प्रारम्भ होता है।

कुल मिलाकर सभी का उद्धेश्य अपने अपने उच्च लक्ष्यों का अर्जन करना होता है और किसी गोल या लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उसे स्टारलाइन बनाना ही पड़ता है। क्रिकेट के खेल में तो अलग अलग मैदान की चौकों छक्कों की दूरियों का भी अलग पैमाना है। किन्तु वहां तो कभी किसी प्रकार की असहिष्णुता मुझे दिखाई नहीं दी। बाउण्ड्री की ओर जाती बॉल को देखकर सभी एक स्वर से तालियां बजाते हैं।

क्या फर्क पड़ता है? कोई पूर्व की ओर मुंह करके अपने आराध्य का ध्यान करता है, कोई पश्चिम की ओर मुंह करके अपने आराध्य का ध्यान करता है। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के वासी को तो इन दोनों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। क्योंकि वह किसे पूर्व माने और किसे पश्चिम- ऊहापोह में जिन्दगी बदस्तूर जारी है। मेरे अल्प ज्ञान से संभवतया उसे सूर्य एवं चन्द्रमा के दर्शन भी न हो पाते हों।

सहिष्णुता एवं असहिष्णुता का पैमाना क्या है? मैं आज तक नहीं समझ पाया। किसी फाइवस्टार होटल से भोजन करके निकलते हुए बाहर खड़े किसी भूखे को हिकारत भरी नजर से देखते हुए कन्नी काट लेने को सहिष्णुता एवं असहिष्णुता में से किस श्रेणी में रखा जाए, सदन के पटल पर रखता हूं। एक मॉल में घुसकर वहां से भौतिकता की अनिच्छित वस्तुओं का जखीरा खरीद कर वहां से निकलने पर गेट पर खड़े किसी ठिठुरते हुए ठण्ड से बचाव को निरर्थक प्रयास में रत बालक को देखते हुए भी नजरअन्दाज कर देने को सहिष्णुता एवं असहिष्णुता में से किस श्रेणी में रखा जाए, चिन्तन जारी रखें।

पुन: मैं विषय पर आते हुए यह कहना चाहूंगा कि नया वस्त्र पहनने पर कुछ नया करने की उत्कण्ठा सहज प्रवृत्ति है। नूतन घर में प्रवेश करने पर कुछ नया करने की उत्कंठा सहज प्रवृत्ति है, उसी तरह नए वर्ष में प्रवेश करने पर कुछ नया करने की उत्कंठा भी सहज प्रवृत्ति की श्रेणी में आनी चाहिए।

बीति ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय... वाली उक्ति को चरितार्थ करें। मैंने बुजुर्गों को प्रणाम करने पर आशीर्वाद स्वरूप सुना है कि ''जुग जुग जीयो, करोड़ दीवाली राज करो''। यह उक्ति सुनकर सोचता हूं - करोड़ वर्ष की उम्र क्या सम्भव है? जो मुझे करोड़ दीपावली देखने का आशीर्वाद मिला है। फिर मैंने केल्कूलेटर से गणना की तो जाना कि यदि प्रति मिनट नई दीपावली मनाऊं, तब जाकर मैं करोड़ का आंकड़ा पार कर पाऊंगा । तब मैंने जाना कि उस बुजुर्ग का भाव कितना गहरा था कि हर पल, हर मिनट नया वर्ष मानकर जीयो, जो आपको कुछ नया करने की प्रेरणा देता रहेगा, तभी अपना जीवन सार्थक हो पाएगा । वरना नये साल का प्रथम माह नव वर्ष की बधाई देने में, बीच के दस माह भूल भुलैया में और दिसम्बर माह पिछले 11 माह का विश्लेषण करने में ही बीत्ता रहेगा। जिस तरह से हमारी सरकारें भी इस तथ्य को जानें तो कुछ जनसेवा सम्भव है। वरना एक वर्ष तो उनके हनीमून पिरीयड, बीच के तीन वर्ष देश को लूटने में एवं अन्तिम वर्ष आगामी चुनाव की तैयारी में बीत जाते हैं।

अन्त में यही कहूंगा कि आपको नया साल मुबारक हो, हर नया सांस मुबारक हो।

चन्द्रशेखर श्रीमाली 'शेखर'
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
प्रारम्भिक शिक्षा विभाग राजसमन्द
मो. 9414621768

देख इधर भी जरा जिन्दगी गजल संग्रह का लोकार्पण

गजल

अपने घरों को यूं सजाया जाए
जहां सबको प्यार से मनाया जाए

हर तरफ हो प्यार भरी खुशबू
ऐसे बगिया को महकाया जाए

रहे प्यार मोहब्बत से सभी
नफरतों को दफन किया जाए

घर छोटा हो, चाहे हो बढ़ा
रहे खुशहाल ऐसा बनाया जाए

जिंदगी है तो फना होगी ही
तो क्यों ना सादगी से गुजारा जाए

खुदा ने दी है कई नेमतें हमको
उसका शुक्र तो अदा किया जाए

लिख ऐसा जो दिल छू ले मुकीम
ऐसे अल्फाजों को सजाया जाए

मुकीम
कांकरोली

उदयपुर शहर के शायर, दोहाकार, बाल रचनाकार और पेशे से चिकित्सक डॉ. गोपाल राजगोपाल के नवीन गजल संग्रह देख इधर भी ज़रा जिन्दगी का लोकार्पण 9 अक्टूबर उदयपुर में जिला कलक्टर चेतन देवड़ा, एडीएम ओपी बुनकर, आरएनटी मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल द्वारा किया गया। इसमें 81 गज़लें शामिल की गई है, जिसकी भूमिका मक़बूल शायर खुर्शीद नवाब ने लिखी है। इस दौरान अतिरिक्त प्रधानाचार्य डॉ. एके वर्मा, डॉ. ललित रेगर, सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी, डॉ. राहुल जैन, श्रीमती राजकुमारी आदि मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि आरएटी मेडिकल कॉलेज के सामुदायिक चिकित्सा विभाग में आचार्य के पद पर कार्यरत डॉ. गोपाल राजगोपाल की हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में छह पुस्तकें जिनमें गजल की जख्म, जब भी दो चार भरते हैं, सभी लाइनें व्यस्त, सबै भूमि गोपाल की, छोटे बच्चे गोल मटोल तथा मेवाड़ी भाषा में मोजर मूंछ्यां प्रकाशित हो चुकी है। दो पुस्तकों पर आपको राजस्थान साहित्य अकादमी से प्रकाशन सहयोग भी प्राप्त हो चुका है। इनकी रचनाएं देश- विदेश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। गोपाल की कुंडलिया तथा शोले के दोहे अगली प्रकाशित होने वाली पुस्तकें है।

काम वो सब किये चलो

पार्थ सपने गढ़े चलो
सुपंथ पर बढ़े चलो
भला हो जिससे देश का
काम वो सब किये चलो।
समय के साथ मिलकर
बस कदम बढ़ाना सीख लो
विपत्ति के इस काल में एकता के
गीत गुनगुनाना सीख लो।
भूल कर भी मुख में
जाति पांति का न भाव हो
देश द्रोहियों के हितों के लिए
मन में कभी न कोई चाह हो
सामप्रदायिकता का भरा घडा है
उसे फोड़कर आगे बढ़े चलो ।
आ रही है आज चारों ओर से
एक बस यही पुकार
देश की रक्षा के लिए
हम करेंगे त्याग अपार
कष्ट चाहे जितने मिलें
मुस्कराते हुए सहेंगे हम
देश के लिए जियेंगे और
देश के लिए मरेंगे हम
देश का जो भाग्य है पुरुषोत्तम
वही भाग्य अपना है मन में सोच लो।
भला हो जिससे देश का
काम वो सब किये चलो।

पुरुषोत्तम शाकद्विपी
उदयपुर राजस्थान

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

मौसमी ईमानदारी

जब से नगरपरिषद चुनाव की घोषणा हुई हैं। गली मोहल्ले में हलचल तेज हो गई। पान के ठेले पर या चाय की दुकान पर जहां देखो वहीं लोग चुनावी चर्चा में व्यस्त है। जैसे जैसे चुनावी रंग चढ़ने लगा तो गली के कई मनचले ठाले और बेरोजगार भी सेवाभावी कर्मठ कार्यकर्ता बनने लगे। अक्सर गली के नुक्कड़ पर बैठ कर हर रोज पान की पिचकारी छोड़कर मोहल्ले का रंग रोगन करने वाला भी आजकल मोहल्ले को साफ सुथरा बनाने का ज्ञान देने लगा।

हमारे देश में साल के बारह महीनों लगभग चार माह तो चुनावी मौसम के बने रहते हैं। कभी लोकसभा तो कभी विधानसभा चुनाव चलते हैं। बाकी समय में कभी नगर निकाय के चुनाव तो कभी पंचायतराज चुनाव आ जाते हैं। इस तरह चुनावी मौसम में नेता के साथ आमजन भी एक अलग आनंद में रहता है। क्योंकि इस दौरान ही तो नेता आकर आम लोगों का हाल जानते हैं। इस समय एक क्षण के लिए नेताओ को आम आदमी की अहमियत मालूम चलती है।

सरकार की योजनाओं से रोजगार मिले न मिले पर इन चुनाव में कई लोगो को रोजगार मिल जाता है। अक्सर निकम्मे बैठने वाले लोग खुद चुनाव में खड़े होकर या चमचों के रूप में साथ दौड़ कर चुनाव में व्यस्त हो जाते हैं।

आजादी के दौर में देश के ईमानदार, सेवाभावी व कर्मठ राजनेताओं की निस्वार्थ देश भक्ति की बदौलत हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई और उन नेताओं को आमजन के बीच काफी सम्मान के साथ स्वीकार किया गया। शायद यही कारण है कि घोटालेबाज बेईमान नेताओं के चुनावी पोस्टर पर भी ईमानदार, कर्मठ, सेवाभावी जैसे शब्दों का दुरुपयोग होने लगा। पार्टी वरिष्ठ लोगों पर अपनी चाटुकारिता के दम पर टिकट लाकर ये नेता सिर्फ चुनाव के दौरान ही सेवाभावी, ईमानदार व कर्मठ होते हैं और इस दौरान रात रात जग कर कुछ लोगों को नोट तो कुछ को शराब का बराबर वितरण कर अपने सेवाभाव और कर्मठता से आमजन को रूबरू कराते हैं। इस प्रक्रिया में सामान्यतः नेता पूरी ईमानदारी रखता हैं, मगर उनके सहयोगी नेता की असलियत बताते हुए उसमें भी घोटाला कर देते हैं। जनता भी दो अयोग्य नेता में कभी सांपनाथ तो कभी नागनाथ को चुन लेती है। इसी तरह के मौसमी सेवाभावी ईमानदार लोग आमजन को प्रलोभन देकर पद प्राप्त कर लेते हैं और पांच वर्ष तक जनभावना व जन सेवा से परे सिर्फ स्वार्थ सिद्धी के लिए पद का दुरुपयोग करते हैं। ऐसे सेवाभावी पार्षद मोहल्ले में कोई सड़क टूटी नहीं होने के बावजूद बना देते है और जो मोहल्ले की आवश्यकता होती है, उसे दरकिनार कर दिया जाता है। कमीशनप्रेमी पार्षद बड़े बजट के अनावश्यक कार्य करने को उत्सुक रहते हैं और बाद में जनता के सामने जिसे विकास का नाम दे दिया जाता है।

वार्ड के विकास कार्य के लिए वार्ड की एक प्रबुद्ध लोगों की समिति का गठन होना चाहिए। यह समिति ही अपने वार्ड से एक ईमानदार व्यक्ति का पार्षद के लिए चुनाव करें। यह पार्षद इस समिति के साथ प्रत्येक मोहल्ले की आवश्यकताओं को समझ कर उन कार्यों को प्रमुखता से कराए, तभी वार्ड का विकास हो सकता है। वार्ड में जो विकास का बजट खर्च होता है, वह प्रत्येक नागरिक को ज्ञात होना चाहिए, जिससे कमीशनखोरी पर भी अंकुश लग सकता है। शहर में नई कालोनियों की प्लानिंग में गार्डन के लिए जगह तो छुड़वाई जाती है, मगर उस पर कभी पार्क विकसित नहीं किए जाते हैं। इस जगह पर ज्यादातर लोग कब्जा करके बैठ जाते हैं। वार्ड समिति यदि हो तो पार्षद के साथ योजना बनाकर इस स्थान का सदुपयोग किया जा सकता है। जब तक ईमानदार और देशभक्त लोग राजनीति से दूर भागते रहेंगे, तब तक चंद चतुर राजनेता अपनी झोली भरते रहेंगे।

वैवाहिक लग्न इन कोविड काल

कोरोनाकाल के वैशाख लग्न में लॉकडाउन के कारण जहां वर-वधू एक दूसरे से सात फेरे में बंधते बंधते रह गए थे, वहीं शादी में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले कमरिया करें लॉलीपाप पर थिरकने वाली बारात की सपना चौधरी, जेन्ट्स नागिन, मुंहफुलवा रिश्तेदार आदि की इच्छाएं भी दबी दबी सी रह गई थी, लेकिन जब कार्तिक लग्न और अनलॉक का आगमन हुआ तो शादी करने की ऐसी जबरदस्त होड़ मची, मानो रोजगार मेला में सरकार साक्षर लोगों को नि:शुल्क नौकरी बांट रही हो और लेने वालो की संख्या रक्त बीज की भांति बढ़ती ही जा रही हो। ऐसा प्रतीत हुआ कि इक्कीसवीं सदी में श्राद्ध और मुंडन का लग्न तो आएगा, लेकिन वैवाहिक लग्न नहीं। अब लोग सोशल डिस्टेंशिग का ख्याल कर शादी ना करते तो सोशलॉजी अर्थात समाजशास्त्र का एक अध्याय परिवार के अस्तित्व पर खतरा तो उत्पन्न हो ही जाएगा न!

बहरहाल बात जब शादी-ब्याह के माहौल की हो तो कुछ दृश्य नजरों के सामने चलचित्र की तरह स्वत: घूमने लगती है। मसलन बिना वजह गुस्से से गुब्बारे की तरह मुंह फुलाए बहनोई या फूफा का चेहरा, सालभर घर की चहारदीवारी में घूंघट काढ़ कर रहने वाली शर्मिली महिलाओं का बीच सड़क डीजे की थाप पर सपना चौधरी बनकर बिंदास नाचना, नागिन डांस पर जमीन पर लोट- लोट कर नाचने वाले दूल्हे के तथाकथित सर्प मित्र, हाथों में प्लेट थामे काउंटर- काउंटर पुरी पुलाव से चटनी तक भोज्य सामग्री संग्रहित करते हड़प्पा काल से भोजन को ललायित बाराती, औकात से ज्यादा दारू सेवन के पश्चात उल्टी कर बिना खाए जनवासा में बेसुध सोने वाले बाराती आदि आदि।

शादी के मुबारक मौके पर एक विशिष्ट व नए प्रजाति के जीव का विकास सहजता से देखने को मिलता है, वो है मुफ्त के मोबाइल कैमरामेन। आज के प्रसंग में मैं इस सर्व सलभ प्रजाति पर ही चर्चा करुंगा।

एक समय था, जब केवल शादी की जीवंत निशानियों को लोग पोस्टकार्ड पिक्चर के रूप में संभालकर रखते थे और अपने बच्चों को दिखाया करते थे। आने वाले समय में उन फफूंद लगी तस्वीरों का नाती- पोते भी दर्शन किया करते थे।

फिर वीडियोग्राफी का सूत्रपात हुआ। मंहगी होने के कारण कुछ गिने- चुने लोगों के शादी समारोह की ही वीडियोग्राफी हो पाती थी और बिरले ही लोगों को वीडियोग्राफी कराने का सौभाग्य प्राप्त हो पाता था। तीन से चार माह बाद जब शादी का कैसेट मिक्सिंग लैब से तैयार होकर आता तो लोग भाड़ा पर भी सीपी को मंगा सपरिवार टोला- मुहल्ला एवं रिश्तेदारों के साथ शादी की वीडियो का आनंद एक उत्सव की तरह लेते थे।

किंतु 4जी युग में ताजा-तरीन विडियो व तत्क्षण उसके टेलीकास्ट ने सारे रोमांच व उत्साह को ही फीका कर दिया है। बहरहाल मैं बात कर रहा था सीजनल डिजिटल कैमरामैन की। ये जीव विवाह के मौके पर कुकुरमुत्तों की तरह उग आते हैं। बारात डांस, रिसेप्शन से वरमाला स्टेज तक ये फ्लैश आन मोबाइल द्वारा कब्जा जमा, रहते है। बारात भ्रमण के पश्चात वरमाला के दर्शनाभिलाषी वर एवं वधू पक्ष के लोग स्टेज के सामने रिलेक्स हो कोक, लस्सी, चाय आदि गटक कर आगे का प्रोग्राम देखने सिनेमा हॉल के स्पेशल क्लास दर्शक की तरह फ्रंट वाली कुर्सी पर विराजमान हो जाते है, किंतु जैसे ही दुल्हन स्टेज पर पहुंचती है, तो एक साथ दर्जनों मोबाइल ऑपरेटर मोबाइल को वीडियो मोड में डालकर स्टेज को घेर लेते है, की पैड, स्मार्ट फोन।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, बिहार

चाट वाले मोहनदा का पूरे गांव के प्रति था अपनत्व का भाव

बुजुर्गों ने बताया कि हमारे बुजुर्गों ने हमें बताया कि सन् 1920 के बाद से ही मेरा गांव कांकरोली अपने परकोटे से कुछ-कुछ बाहर निकलने को आतुर होने लगा था। सूरजपोल के बाहर भी, चांदपोल के बाहर भी और बड़े दरवाजे के बाहर भी विट्ठल विलास बाग के फाटक तक और नए बाजार से लेकर भगवानदासजी की हवेली तक लोगों ने इक्का-दुक्का मकान और दुकानें बनाना प्रारम्भ कर दिया था। 40 का दशक आने तक बड़े दरवाजे के बाहर हरजीवन आश्रम धर्मशाला और श्री बालकृष्ण विद्याभवन विद्यालय भी बनना प्रारम्भ हो चुका था। नए बजार के अंत में 15-20 मकान साहू समाज (तेली का मोहल्ला) था।

साहू समाज के इसी मोहल्ले में सन् 1926 में श्री राधाकृष्णजी तेली के यहां माता श्री खमाणी बाई की कोख से एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम मोहनलाल रखा गया। बाल्यकाल में पिता और माता की छत्र छाया में श्री मोहनलाल खेलता कूदता अपने घरेलू कामों को अंजाम देता, किशोरावस्था में आकर कुछ काम धाम की तलाश में संघर्ष करता विभिन्न प्रकार के कई काम करता रहा। पर उन्हें सफलता मिली पानी-पुड़ी की लारी और चाट के थेले से और फिर तो उन्होंने आइस्क्रीम बनाने की छोटी मोटी मशीन अपने घर पर ही लगाकर आइस्क्रीम का काम प्रारम्भ कर दिया। समयानुसार मनोहरी बाई नामक बालिका से उनका विवाह हो गया, जिससे उनके चार पुत्र श्री द्वारकाप्रसाद, लक्ष्मण, रामचन्द्र और बालकृष्ण व दो पुत्रियां मांगीदेवी और फुला देवी हुई।

युवावस्था में वे कठिन परिश्रम किया करते थे, अपने व्यवसाय के काम के साथ साथ वे समाजसेवा से भी जुड़े रहे। मोहल्ले के बुजुर्ग बताते हैं कि समाज के हर काम में वे अग्रणी रहा करते थे। समाज के नोहरे के आगे जो दुकानें बनी, उसमें उन्होंने तन-मन और धन हर तरह का सहयोग किया। कोई भी प्रीतिभोज या मांगलिक कार्य में वे हमेशा आगे रहा करते थे।

मैंने अपने बचपन में सन् 1953-54 में उन्हें पानी-पुड़ी की लारी पर ये चाट की बुलन्द आवाज के साथ कई बार देखा, सुन्दर टॉकीज के बाहर माताजी के मन्दिर के किनारे पर उनकी लारी रोज अपराह्न 2-3 बजे लग जाती थी, उन्हें जब भी ग्राहकों से फुरसत मिलती, वे बुलन्द आवाज में ये चाट का उच्चारण इतनी जोर से करते कि पूरा बाजार गुंज उठता था। वे यहां सुन्दर टॉकीज के बाहर ये चाट का घोष करते और मन्दिर की परिक्रमा में सुनाई देता। उनकी चाट का स्वाद भी बहुत अच्छा होता था, सभी लोग बड़े चाव से उनकी पानी पुड़ी, दहीबड़े चटकारे ले लेकर खाते थे। एक आने में 8 पानी पुड़ी यानि 6 नए पैसे की आठ पानी पुड़ी एक जने को तृप्त कर देती थी।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

बच्चे भी बड़े चाव के साथ पानी पुड़ी का आनन्द लेते थे, कोई पाव आना लाता तो मोहनदा 2 से 3 पानी पुड़ी से बच्चे को तृप्त कर देते, कोई आधा आना की 4-5 पानी पुड़ी खा लेता और आनन्द लेता। इसी दौरान एक घटनाक्रम को देख मैं मोहनदा को आदर भाव से देखने लगा। मेरे मन में उनके प्रति सम्मान और आदर के भाव उमड़ पड़े। हुआ यूं कि कुछ बच्चे पानी पुड़ी खा रहे थे, तो कुछ बच्चे पैसे नहीं होने के कारण दूर से ही अन्य बालकों को पानी पुड़ी खाते देख दूर से ही ललचाई नजरों से ताक रहे थे।

मोहनदा ने उन बच्चों को अपने पास बुलाया और उन 4-5 बच्चों को 1-1 पानी पुड़ी बिना पैसे लिए खिलाकर ये चाट का घोष बुलन्द कर दिया। इस तरह वे रोज करीब 10-12 पानी पुड़ी ऐसे ही बालकों को बिना पैसा लिए खिला दिया करते थे। मुझे अच्छी तरह याद हैं मोहनदा के एक मित्र ने मोहनदा को टोका, ये क्या कर रहे हो यार बिना पैसा लिए रोज इस तरह 10-12 ही नहीं, बल्कि 15 पानी पुड़ी मुफ्त में क्यों खिला रहे हो ? मोहनदा हंसकर बोले कई फरक पड़े है यार आपणे गांव का छोरा है। इस घटनाक्रम में और मोहनदा के कहे वाक्यो में कितने अपनत्व का अहसास मुझे कराया कि ये गांव गांव नहीं मेरा अपना परिवार है, यहां हर कोई हर किसी का अपना ही है। काश ये भावना आज भी मेरे गांव में होती।

मोहनदा के आइस्क्रीम बेचने का भी अंदाज अलग व निराला था। सुबह एक पेटी में निवार में लपेट कर एक बड़ा सा आइस्क्रीम का गट्टा और बड़े पेड़ के पत्ते जो साफ पानी से धोए और काट-छांट कर किसी प्लेट की तरह सजाकर उसी बुलन्द आवाज में आइस्क्रीम कहते हुए मोहल्ले-मोहल्ले में अपने कंधे पर आइस्क्रीम की पेटी ले 1 पैसे लेकर आना दो आना तक की आइस्क्रीम बैचा करते थे। मजा तो तब आता था, जब दिन को कभी आइस्क्रीम बिकती नहीं थी, तो शाम होते ही मोहनदा आइस्क्रीम की निलामी बोली लगाने का मजमा लगा लेते थे। वे एक बड़ा सा आइस्क्रीम का गट्टा काटते उसे बड़े से केले के पत्ते पर रखते और शुरू हो जाते एक आना, एक आना, बड़े सो पाये, कोई कहता दो आना तो वो बोलते दो आना दो आना बड़े सो पाये। हम भी याने मैं हुक्मीचन्द पालीवाल (पहलवान) शंकर देवपुरा, कमलसिंह, मुरलीधर और भी कई मित्र इस निलामी में शरीक होते थे। हम सब में अग्रणी हुक्मीचन्द था। मोहनदा बोली लगाते दो आना दो आना तो हुक्मीचन्द बोल पड़ता, तीन आने और मोहनदा बोल पड़ते तीन आना एक, तीन आना दो और पीछे से फिर आवाज आती चार आना, मोहनदा फिर बोलते चार आना एक, चार आना दो, फिर कोई बोल पड़ता पांच आना पांच, मोहनदा बोलते पांच आना एक, पांच आना दो, कभी हुक्मीचन्द बोल पड़ता तीन आना। मोहनदा बोल उठते तीन आना एक, तीन आना दो और तीन आना तीन और पांच आने की बोली लगा आइस्क्रीम तीन आने में मिल जाती और हम सभी दोस्त मिलजुलकर उस आइस्क्रीम को चट कर जाते थे। ऐसे थे हमारे बुजुर्ग मोहनदा अपने गांव को एक परिवार और गांव के हर बच्चे को अपना बच्चा मानने वाले आदर्श पुरूष। आज भी उनके पोते चाट का प्रतिष्ठान चला रहे हैं।

14 जुलाई सन् 1996 को आपने अंतिम सांस ली और हम सबको छोड़ गए। मिठी-मिठी और आदर्श यादों के साथ मेरे गांव के ऐसे आदर्श को शत् शत् नमन् और हार्दिक श्रद्धांजलि।

प्रस्तोता :

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार,
जलचक्की, कांकरोली, राजसमंद
मो. 98284-75288

राजस्थानी केणावतां

लछमी परदे वसे

अर्थात् – लक्ष्मी यानि धन दौलत को गुप्त रखी जाने की लोग बात करते हैं। अगर खुला धन रहेगा तो चोर डाकू चुरा लेंगे, ऐसा मत है, किन्तु स्थायी जमीं– जायदाद व घर आदि आसानी से किसी गैर के हाथ नहीं लगते।

लाड़ी रौ खादो अर पाड़ी रौ खादो एळो नी जावै

अर्थात् – बहू का खाया और दुधारू पशु गाय– भैंस को दी गई खुराक पुनः गृहस्थी को कहीं न कहीं लाभ देती है। बहू गृहस्थी चलाने की क्षमता हासिल करती है, तो दुधारू पशु खुराक के अनुसान अधिक दूध का लाभ दे देता है।

ओदसां रौ चाचरो अर गाड़ी रौ फाचरो कूट्योई अरथ रौ

अर्थात् – मुर्ख लोगों की यह कहावत थी कि औरत को पीटने व धमकाने से ही वह वश में रहती है। यह कहावत अब नहीं मानी जाती। कूटने का अर्थ मारना नहीं हो सकता, जैसे कि ताड़ना का मतलब ज्ञान की बातोंसे समझाना था, लड़ना– झगड़ना नहीं।

लगायां तो कान पकड़ी छाळी

अर्थात् – मुर्ख लोग औरतों को कमजोर या अबला समझाने की बहुत बड़ी गलती करते हैं। उन्हें पता नहीं कि वह जगत जननी है। गृह लक्ष्मी है, विद्या की देवी सरस्वती है और दुष्टों के लिए महाकाली भी है।

किरणरी मां हेर हूंठ खादी जो अस्यो काम करी सकें

अर्थात् – माताएं प्रसव के समय सूंठ जड़ी– बुटी खाकर अपनी खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त कर लेती है। यही शक्ति संतान में भी दूध के साथ पहुंच जाती है और वह भी संसार में नाम रोशन कर माता– पिता को यश दिलाता है। जैसे– राणा प्रताप, शिवाजी और सरदार पटेल जैसे पुत्र हुए, तो सीता, पार्वती जैसी देवियां पैदा हुई।

चुणाव री चौपाल

हंकरात रौ त्युहार आयो तो घरां– घरां मांहि खींच रांध्या ग्या हा। तप तापतां खेड़ा री भागळ गाम रा हेंग तापणिया में चरचा चाली खींचड़ा री। कोई केवा लागो के मक्की रौ खींच तो कोई गोळ अर घी रै लार सवाद लागे अर कोई बोल्यो के गेवां रौ दूध में रांध्यो खींचड़ो मजेदार हो। मारवाड़ रा बाजरा रै खींच री वाताई चाली। वातां में चुणाव री वात निकालता तप तापणिया भूरा बा बोल्या– बेटी रा बाप खेमा! नुंवो जमानो आग्यो रे। अबे तो लगायां मनखां री पाग बांधवा लागी गी। खेमो बोल्यो– भूरा बा! अस्सी कई वात व्हेगी ओ। अरे देखेनी, आपणे गाम री सरेपंच, वा चमना गमेती री वू रामी वणीगी। भूरा बा निसाया नाखता बोली ग्या। खेतो आठवीं पौथी पढियोड़ो मोट्यार केवा लागो– अरे भूरा बा! अबे

आपणे गामरीज वात मती करो, ईं वखत केई गामां में लगाया जीतीरी है। भूरा बा बोल्या– अरे म्हारा दादा केवता, ओदसां चाचरो अर गाड़ा रौ फाचरो कूट्योई अरथ रौ। बा अबे बूढ़ा वीया हो, अस्सी वातां सोभा नी देवे। थारां घर में देखो नी जमनी बारवीं कलास में पेलां नम्बरऊ पास वी अर वीने सरकार गार्गी पुरस्कार में साईकल दीदी।

भूरा बा हुणीर सकपकाई ग्या अर बोल्या– अरे भाया म्हारो केवारौ अरथ तो ओ हो के– लछमी परदे वसे। अतराक में गामरा हैड मास्टर साब आई ग्या। सब लोगां हाथ जोड़ीन आदर कीदो। मास्टर साब बोल्या– आप लोगां री चरचा चालवा दो। भूरा बा बोल्या– मास्टर साब लगाया तो कान पकड़ी छाली व्हे, वणांने केवा परवाणे चालनो छावै। अबे कई गलत वात है, जो म्हने हमझावो। मास्टर साब बोल्या– भूरा बा! लगई घर री लछमी व्हे, वीरो आदर करोला तो रेवेला नी तो वा महाकाळका रौ अवतार भी वाजे। झांसी री राणी लछमी बाई, अंगरेजां रा छक्का छुड़ाई दीदा। भारत री इंदरा गांधी पूरब रा पाकीस्तान ने खतम करी दीदो, व्हे कई लगाया नी ही। लोग आ वात भी केवे के लाड़ी रौ खादो अर पाड़ी रौ खादो एळो नी जावे...., किणरी मावां हेर हूंठ खादी जो, अस्सी बेट्या जणे। अरे आप लोगां नै कीतर हमजावां। बेट्या तो धरम री धजा व्हे है। हुणो–

भणी– पढ़ी व्हे टाबरी, हुदरे दो परिवार।
पीयर पेलां सुधारे, पछे सासरो लार।।

पढ़ावा वालो एक टाबर बोल्यो– गुरुजी! आपणे अस्कूल में जो गीत गुवायो वीरी एक लेण आप केवो तो अणानै हुणाई दूं। हां–हां बोल, गुरुजी हांभल भरी। छोरो गावा लागो–

छोर्या नै भणवा मेल, जमानो भणवा रौ।
टाबर नेरै भणवा मेल, जमानो भणवा रौ।।

रात री वातां में बारां वजगी। तप ठाड़ो वीयो अर हेंग तापणिया पछेड़ो ओढ़ीन घरां री गेळ पकड़ी। गोरमां रा खेतां में हीयाल्या हुंक्यां अर आठम रौ चन्दरमा आभे री सोढ सूं मुण्डो काढ़ीन झांकवा लागो।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

महारानी पद्मिनी-सूर्यदेव : निर्णायक संवाद

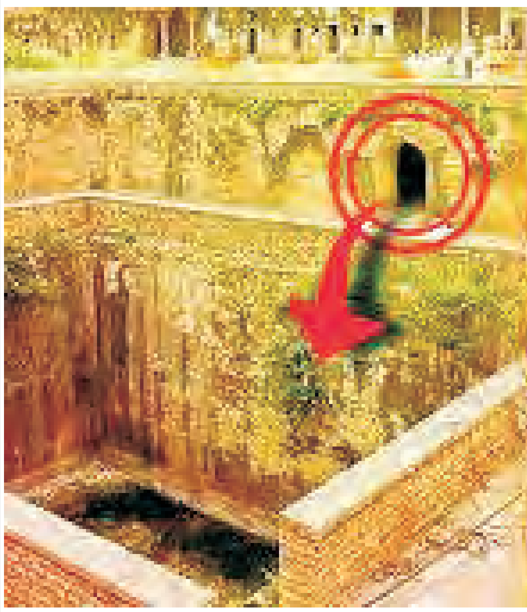

अपने महल के झरोखे में से अस्ताचल की ओर बढ़ते हुए सूर्यदेव से महारानी पद्मिनी का आखिरी वार्तालाप था। वह शक्ति के महान देवता से अपने सवालों का जवाब पाना चाहती थी। उसने तटस्थ होकर सूर्यदेव से अपनी विश्वास से परिपूर्ण नजरे मिलाई और पूछा कि पिछले कई महीनों से राज महल के बाहर डेरा डाले बैठी इस समस्या का समाधान क्या हो सकता है? सारे जहां को अपने प्रकाश (ज्ञान) से सारोबार करने वाले पथ प्रदर्शक देवता के पास महारानी के इस प्रश्न का निर्णायक जवाब नहीं था। कुछ वक्त के लिए उनकी गति रुक सी गई। क्योंकि इस प्रश्न ने उनको अंदर तक उद्वेलित कर दिया। वो इतना परेशान व विचलित पहले कभी नहीं दिखे। महारानी पिता तुल्य सूर्यदेव से जवाब सुनना चाहती थी। सूर्यदेव जवाब देने में सामर्थ्यहीन होने से महारानी से नजर नहीं मिला पा रहे थे।

इस ऊहापोह की परिस्थिति में प्रकृति के सभी क्रियाकलाप थम चुके थे। इंसानों के परे पशु पक्षी इस मंजर का आभास कर चुके थे। वह भी जानना चाहते थे कि इस महान संवाद का परिणाम क्या होगा। तब सूर्यदेव ने साहस जुटाकर महारानी से कहा कि युद्ध तेरी नियत ही नहीं है, विकल्प हो सकता है, पर मैं इसकी इजाजत नहीं देता। ज्यादा समय मैं ठहर नहीं सकता। इस प्रश्न का जवाब एवं उलझन का हल दोनों ही में आने वाली शाम में निश्चित ही देने का प्रयास करूंगा। अब मैं तुमसे आज्ञा चाहूंगा।

लेकिन सूर्यदेव इस बात से अनजान कि उनकी आभा का आश्रय पाकर महारानी निर्णय कर चुकी है। महारानी ने सूर्यदेव को प्रणाम किया। अंतिम बार दर्शन कर स्वयं के जेहन में अपार शक्ति का संचय किया। सूर्यदेव ने बोझिल कदमों से मंजिल की तरफ ना चाहते हुए भी प्रस्थान कर दिया। महारानी भी झरोखे से महल के प्रांगण में आ चुकी थी। सवालों से लदे हुए सूर्य देवता ने जब इस वार्तालाप का जिक्र अपनी पटरानी से कर पूर्ण वृत्तांत सुनाया, तो वह महारानी पद्मिनी के भावों को भांप चुकी सूर्य भगवान की रानी ने समझाया कि इसका जवाब आपको स्वत: मिल जाएगा।

महल के प्रांगण से महारानी पद्मिनी ने महल की समस्त रानियों के लिए संदेश भिजवाया। कुछ समय पश्चात महल का मुख्य प्रांगण अपसराओं की सी रानियों से पुलकित हो उठा। रात को भी यह महल रानियों के मुखमंडल की आभा से चमक रहा था। अद्भुत सूर्य के प्रकाश के समान चमकते मुखमंडल तथा आत्मविश्वास से लबरेज महारानी पद्मिनी ने सभी रानियों के चेहरे की आभा को निहारा। शांत एवं महारानी के आदेश की प्रतीक्षा में चमकते चेहरे,

महारानी ने अपनी बात कहने से पहले उनके समस्त सवालों को अपने जेहन में महसूस किया और उसी क्षण महारानी ने सबका नेतृत्व करते हुए उनके सवालों को नकार दिया और गहरी सांस भरते हुए कहा आखिर कब तक यूं ही महलों की चारदीवारी में बंद रहेंगे। शत्रु महल के द्वार पर पहरा लगाए बैठा है। वह हर तरह के षड्‌यंत्र और प्रयास कर चुका है, परंतु अब तक असफल। आखिरकार इस नियति का कोई तो अंत होगा। सदियों से अविजित इस एकलिंग धरा के वीर सिपाही हमारी खातिर भयभीत हो रहे हैं। उनकी महान वीरता हमारी वजह से चुप है। यह हमें मंजूर नहीं कि हम उनकी दुर्बलता का कारण बनें। गौरवशाली चित्तौड़ वंश के इतिहास में वीरांगना भी वीर की असीमित शक्ति और साहस का प्रतिरूप होती है। अब वक्त हमसे इस बात का प्रमाण मांग रहा है। आज इस गौरवशाली वंश की परंपराओं और मातृभूमि की रक्षार्थ हमारे बलिदान की आवश्यकता है। हमें फिर उसको साबित करना होगा कि रानियां महल की शोभा ही नहीं, अपितु वीरत्व का शिखर है।

हे महान रानियों! हमें आज सूर्यदेव के आशीर्वाद से जौहर की कल्पना को यथार्थ में बदलकर अपनी महान परंपराओं की रक्षा करनी है। अपने बोझ से महान वीरों को मुक्त कर चित्तौड़ की भूमि का दुश्मन के लहू से अभिषेक करने के लिए उन्हें प्रेरित करना है। हमें मिसाल कायम करनी है, भविष्य की नारी के लिए, जिससे वह सम्मान के साथ गौरवशाली महसूस कर सकें।

महारानी पद्मिनी के इस महान उद्घोष के साथ ही रानियां अपनी स्वीकृति भी दे चुकी थी। ऐतिहासिक परंपरा को निभाने के लिए आतुर हो उठी। राजा और सामंतों को निर्णय से अवगत कराया गया। यह निर्णय सुनते ही वीरों की सुसुप्त वीरता हुंकार उठी। ऐसी गर्जना हुई कि पूरा ब्रह्मांड थर्रा उठा।

पुरुष एवं महिलाएं अपने बलिदान से एक महान ऐतिहासिक गाथा लिखने को प्रतिबद्ध हो युद्ध तथा जौहर की तैयारियों में लीन हो गए। चांदनी रात में चंद्रमा भी इस विहंगम दृश्य को देख रहा था। उसने महसूस किया कि यह ऐसे उत्सव की तैयारी है, जिसका अस्तित्व सूर्य तथा चंद्रमा के रहने तक रहेगा। प्रकृति का हर जर्रा आने वाली सुबह को महसूस कर रहा था।

महारानी पद्मिनी के महल के मुख्य प्रांगण में विशाल चिता को सजाया गया। उसका संपूर्ण श्रृंगार किया गया। क्योंकि यहां ब्रह्मांड के सबसे बड़े यज्ञ का आयोजन होने वाला है। रात का आखिरी पहर, युद्ध तथा जौहर की तैयारियां पूर्ण हो चुकी थी। रानियों ने जलाभिषेक कर संपूर्ण श्रृंगार किया। पतिदेव के अंतिम दर्शन किए, तो उन पुरुषों ने अपने को सबसे गौरवान्वित महसूस किया। महारानी पद्मिनी जब सोलह श्रृंगार कर रावल रतन सिंह के सम्मुख हुई, तो राजा ने महारानी के दर्शन से अपने को आपको अभिभूत किया। अब समय आ चुका था इस महायज्ञ में आहुति देने का। इंतजार था सूर्योदय का।

सूर्यदेव, महारानी पद्मिनी के सवालों के जवाब में निरुत्तर ही अपनी यात्रा पर निकल पड़े। किस तरह सामना करूंगा, उस महारानी का। सूर्यदेव की पहली किरण उस हवन कुंड पर पड़ी और उसकी आभा से पूरा आसमान चमक उठा और उससे बेखबर सूर्य चलायमान रहा। उधर तीव्र मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ आहुति के लिए उद्धत हो उठा। ज्वाला धधकने लगी। त्याग एवं बलिदान की प्रतिकृति महारानी पद्मिनी के कदम अपनी रानियों के साथ निरंतर बढ़ते चले गए और देखते ही देखते उस ज्वाला ने विकराल रूप ले लिया। सूर्य से सहस्त्रों गुना तेज लपटें आसमान को छूने लगी, तो सूर्य देवता को समझते देर न लगी। सूर्यदेव ने उस महारानी के दर्शन कर साष्टांग प्रणाम किया। अपना उत्तर पाकर उस यज्ञ की ज्वाला के सामने अपनी ज्वाला को हीन महसूस किया। धीरे- धीरे तीव्र होती लपटों से वीरों में क्रोध का तीव्र संचार हुआ। तलवारे बिजली कि सी भांति चमक उठी। देखते ही देखते अरसे से बंद महल के दरवाजे खुल गए। घोड़ों की टापों से गुंजते हुए अट्टहास करती हुई तलवारें दुश्मनों पर टूट पड़ी। गुहिल धरा रक्त से लाल हो उठी। दुश्मनों की चित्कारें और एकलिंगजी के वीरों का रणघोष विकराल ध्वनियां उत्पन्न करने लगा।

धीरे-धीरे तीव्र होते और ढलते सूर्य के साथ उन वीरों ने दुश्मनों की लाशों से सूर्यदेव का इस्तकबाल किया। आखिर दम तक तलवारें चलती रही और दुश्मनों के रक्त से अविरल धारा बहती रही। शाम होने से पहले इतिहास लिखा जा चुका था। मेवाड़ के वीरों के अदम्य साहस से दुश्मन की रूह कांप उठी। उनकी वीरगति के उपरांत महल के अंदर प्रवेश करने की हिम्मत काल नहीं जुटा पा रहा था। इस प्रकार एकलिंग योद्धा के हाथों में दो तलवारें, खून से लथपथ बदन तथा पास में पड़ी सैकड़ों दुश्मनों की लाशें वो (काल) ना चाहकर भी मुग्ध हो उठा। अनायास ही उसके मुंह से निकला, वाह! अद्भुत, अकल्पनीय, ऐतिहासिक। जब वह महल के मुख्य प्रांगण में पहुंचा तो बलिदान के इस स्वरूप (जौहर) को देखकर स्तब्ध हो उठा। चिता अभी भी धधक रही थी। ज्वाला अभी भी निकल रही थी। अपनी संपूर्ण यात्रा के दौरान इस मंजर को झेलने वाले सूर्यदेव के जाने का वक्त आ चुका था। सूर्यदेव ने उस चिता एवं झरोखे को प्रणाम कर अपनी गति बढ़ा दी।

हितेन्द्र सिंह
मारवाड़, मो. 99506-60010

हमारे भारत की पहचान, बेचारा लाचार किसान

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग रामभद्राचार्य
विकलांग विश्वविद्यालय यूपी 8604112963

अभी हम हल चला रहे हैं
आज ढाई बजे तक हमें
बुआई करनी है...

जनवादी साहित्यकार नागार्जुन की ये पंक्तियां उस प्राणी की दशा का बयान कर रही हैं, जिसे कृषक, अन्नदाता, भूमिपुत्र, धरतीसुत, किसान आदि संबोधनों से संबोधित किया जाता है। जो जमीन से जुड़ा रहता है, गर्मियों की प्रचण्ड धूप, सर्दियों की हाड़कंपाऊ ठंड और वर्षा की मुसलाधार बूंदे भी उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति के सामने नतमस्तक हो जाती हैं। किसान के लिए उसकी भूमि ही सबकुछ होती है। उसे सबसे अधिक आनंद भूमि की समीपता प्रदान करती है। फसल का लहलहाना उसके नयनों को संतोष प्रदान करता है। मिट्टी का सोंधापन उसकी आत्मा को तृप्त करती है। कृषक के पंकिल पांवों का स्पर्श पाकर धरती भी धन्य हो जाती है। धरती के आंचल को अपने श्रमजल से सिंचकर उपजाऊ बनाना किसान को अच्छी तरह से आता है।

किसान जीवन पर कुछ भी कहना या लिखना बड़ा ही सरल कार्य है, किंतु किसान बनना अथवा किसान की पीड़ा का अनुभव करना टेढ़ी खीर है। जितने महान विचारक हुए सबने किसान की भलाई के संबंध में अपने भाव व्यक्त किए, पर क्या अभी तक किसान जीवन में कोई परिवर्तन हुआ है? पंचतंत्रकार ने कहा– कृषि: क्लिष्टा अर्थात खेती करना अत्यंत कठिन है। वास्तव में खेती करना श्रमसाध्य कार्य है। निराशावादी यह कार्य कभी नहीं कर सकते। इसके लिए साहस, धैर्य, शारीरिक शक्ति के अतिरिक्त आशावादी होना बहुत आवश्यक है। किसान बड़ा आशावादी होता है। उसका प्रत्येक कार्य आशा आधृत होता है, खेतों में बीज इस

आशा से डालता है कि पैदावार अच्छी होगी। बीजारोपण के पश्चात उसके दिन-रात इसी आशा में गुजरते हैं। गत वर्ष से अच्छी इंद्रदेव की कृपा खेतों पर होगी। इंद्रकोप से अतिवृष्टि या अनावृष्टि हुई तो किसान फिर भी आशा का पल्लू थामे रहता है, उसे यह आशा रहती है कि इस बार नहीं, तो अगली बार फसल अच्छी होगी।

सोचिए अगर सभी किसान एक वर्ष अपना लाभ-हानि का विचार कर फसल न उगाएं, तो क्या होगा? पैसे वालों की अकड़ धरी की धरी रह जाएगी, जो अन्नदाता अपने पसीने की गंध मिट्टी में मिलाकर अन्न न उपजाए। लेकिन क्या उसके त्याग और श्रम का समुचित सम्मान किया जा रहा है? महंगी दवाएं- बीज डालकर, अथक परिश्रम करके अनाज और सब्जियां उगाता है, किंतु वही अनाज उसे औने- पौने दामों में विवश होकर बेचना पड़ता है। क्योंकि न कोई उचित भंडारण की व्यवस्था है और न ही इतना धन है कि वह अपने स्तर से कर सकें। जब सड़कों पर या भंडार गृहों में अनाज सड़ने की सूचनाएं आती हैं, तो हृदय चित्कार करने लगता है और तब महाप्राण निराला की ये पंक्तियां चित्तपटल पर उभर आती हैं। वह आता/ दो टूक कलेजे को करता, पछताता/ पथ पर आता। इससे लज्जास्पद बात क्या होगी कि किसानों को अपने अधिकार के लिए आंदोलन करने पड़ते हैं, लाठियां-गोलियां खाकर जान से हाथ धोते हैं। कुछ किसान तो विपरीत परिस्थितियों से इस तरह हताश हो जाते हैं कि आत्महत्या उनको सुगम लगती है और जीना कठिन। हम किसान हितैषणा का दंभ तो भरते हैं, परन्तु सारे प्रयत्न ऊंट के मुंह में जीरा लगते हैं।

महात्मा गांधी ने अपनी मृत्यु से एक दिन पहले एक सभा में कहा था- मेरी चले तो हमारा गवर्नर जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वजीर (प्रधानमंत्री) किसान होगा, सब कुछ किसान होगा। क्योंकि यहां का राजा किसान है, मुझे बचपन से एक कविता सिखाई गई। हे किसान, तू बादशाह है। किसान ज़मीन से पैदा न करें, तो हम क्या खाएंगे? हिंदुस्तान का सचमुच राजा तो वही है, लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे हैं। परन्तु बापू का यह सपना आज के भारत में क्या साकार हो सकता है? जब जनतंत्र का मतलब भीड़तंत्र या धनतंत्र बनता जा रहा हो, तो ऐसे में एक गरीब किसान को सत्ता तक पहुंचने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ेंगे, इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है। मुझे तो इस बात का बड़ा ही अफसोस है और आश्चर्य भी होता है कि आज तक किसी भी राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में किसी भी किसान को मनोनीत क्यों नहीं किया गया, जबकि अन्य क्षेत्रों की तरह किसान भी तो कर्मठता का प्रतीक है। गवैया, नचैया और खेलैया जो कभी दर्शन तक नहीं देते हैं, वो भी सत्ता में सम्मिलित कर लिए जाते हैं, परन्तु रियल हीरो इस सम्मान से अभी तक वंचित है।

सच्चे अर्थों में किसान कर्मठ और परमहंस होता है, जिसके लिए प्रत्येक परिस्थिति बाधा नहीं, अपितु लक्ष्य संधान की ओर अग्रसर करती है। प्रत्येक वर्ष 23 दिसम्बर को किसान दिवस तो मना लिया जाता है, किंतु किसानों की उन्नति पर कितना ध्यान दिया जा रहा है, इस पर विचार- विमर्श करने की आवश्यकता है।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

5G तकनीकी के बढ़ते दौर में हमारी सबसे अहम जरूरत

तकनीकी के बढ़ते दौर में हमारी सबसे अहम जरूरतों में स्मार्टफोन और इंटरनेट है। इसके साथ ही हमें स्मार्ट फोन और इंटरनेट को चलाने के लिए उच्च स्तरीय नेटवर्क की जरूरत भी है। आज जीवन इंटरनेट और स्मार्टफोन के बिना अधूरा है और 5G उसी को उन्नत बनाने के लिए जरूरत है। एक उच्च स्तरीय नेटवर्क की जो कि 5G नेटवर्क के साथ पूरी होने की कगार पर है। 5G पांचवीं पीढ़ी का मोबाइल नेटवर्क है। यह 1G, 2G, 3G और 4G नेटवर्क के बाद वैश्विक वायरलेस मानक है। 5G विशिष्ट प्रकार की नेटवर्क क्षमता प्रदान करता है, जिससे सभी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को नेटवर्क के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। 5G वायरलेस तकनीकी उच्च डाटा स्पीड, अल्ट्रा लो लेटेंसी और अधिक विश्वसनीयता सहित पैमाने पर कार्य करने की नेटवर्क क्षमता का श्रेष्ठतम नेटवर्क है और यह उपयोगकर्ता को एक विशेष अनुभव प्रदान करता है। उच्च प्रदर्शन और बेहतर दक्षता के माध्यम से यह उपयोगकर्ता की जरूरतों जैसे की वाहनों में भी चलते समय उच्च स्तरीय डाटा उपलब्ध करवा कर सुविधा को सशक्त बनाती है।

4G एलटीई की तरह 5G OFDM (ऑर्थोगोनल फ्रिकवेंसी डिविजन मल्टीप्लेक्सिंग) के सिद्धांत पर कार्य करता है और यह मोबाइल नेटवर्क सिद्धांतों पर काम करेगा। हालांकि 5G NR (न्यू रेडियो) एयर इंटरफेस और स्केलेबिलिटी के उच्च स्तर को प्रदान करने के लिए और ओएफडीएम को बड़े पैमाने पर प्रयोग करेगा।

5G को पहले से कहीं अधिक डाटा कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए तथा रियल टाइम डाटा ट्रांसफॉरमेशन के लिए डिजाइन किया गया है। 5G एक एकीकृत अधिक सक्षम नेटवर्क इंटरफेस है, जिससे नई सेवाएं देने और एक विस्तार की जाने वाली क्षमता के साथ में बनाया गया है। यह उच्च गति और बेहतर विश्वसनीयता के साथ में बहुत ही कम देरी के साथ में डाटा की सेवाओं को प्रदान करने की क्षमता रखती है। यह मोबाइल नेटवर्क के क्षेत्र में एक विशेष उपलब्धि है, जिससे सुरक्षित परिवहन व्यवस्था, दुरुस्त स्वास्थ्य सेवा, उन्नत कृषि सहयोग, डिजिटाइज लॉजिस्टिक व्यवस्था, उच्च स्तरीय शिक्षण व्यवस्था तथा सभी प्रकार के उपकरणों एवं सॉफ्टवेयर को आपस में जोड़ कर क्रियान्वत किया जा सकता है, जो कि इन्फोर्मेशन एवं कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी की दिशा में नया कदम प्रदान किया करेगा।

5G को आईएमटी-2020 की आवश्यकताओं के आधार पर 20

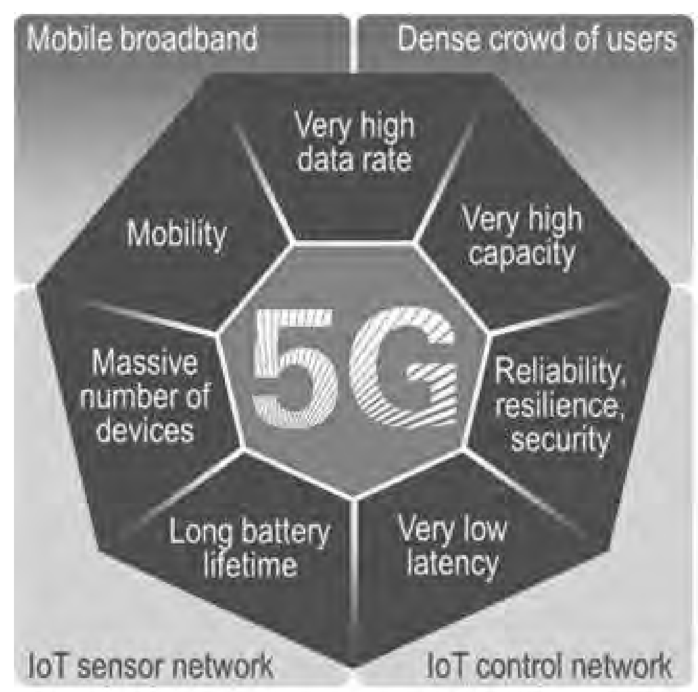

जीबीपीएस तक की उच्च डाटा दरों को वितरित करने की क्षमता के अनुसार डिजाइन किया गया है। 5G को नए स्पेक्ट्रम जैसे कि mmWave में विस्तार करके अधिक नेटवर्क क्षमता प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है। 5G बहुत ही कम विलंब में अधिक डाटा स्पीड प्रदान करता है और समग्र रूप से समान उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता जब कहीं घूम भी रहे होते हैं या तेज गति में भी होते हैं, तब भी डाटा दर लगातार उच्च स्तर की बनी रहती है। 5G एनआर मोबाइल नेटवर्क एक गीगाबीट एलटीई कवरेज द्वारा समर्थित है, जो सर्वव्यापी गीगाबाइट क्लास कनेक्टिविटी प्रदान करता है।

विशेष रूप से 5G का उपयोग मुख्य प्रकार की कनेक्टेड सेवाओं में किया जाता है, जिसमें एन्हास्ड मोबाइल ब्रॉडबैंड, क्रिटिकल कम्युनिकेशन और बड़े पैमाने पर IoT के उपकरणों को जोड़ना शामिल है। 5G की एक परिभाषा यह भी है कि इससे भविष्य की जरूरतो और अनुकूलताओ के लिए तैयार किया है।

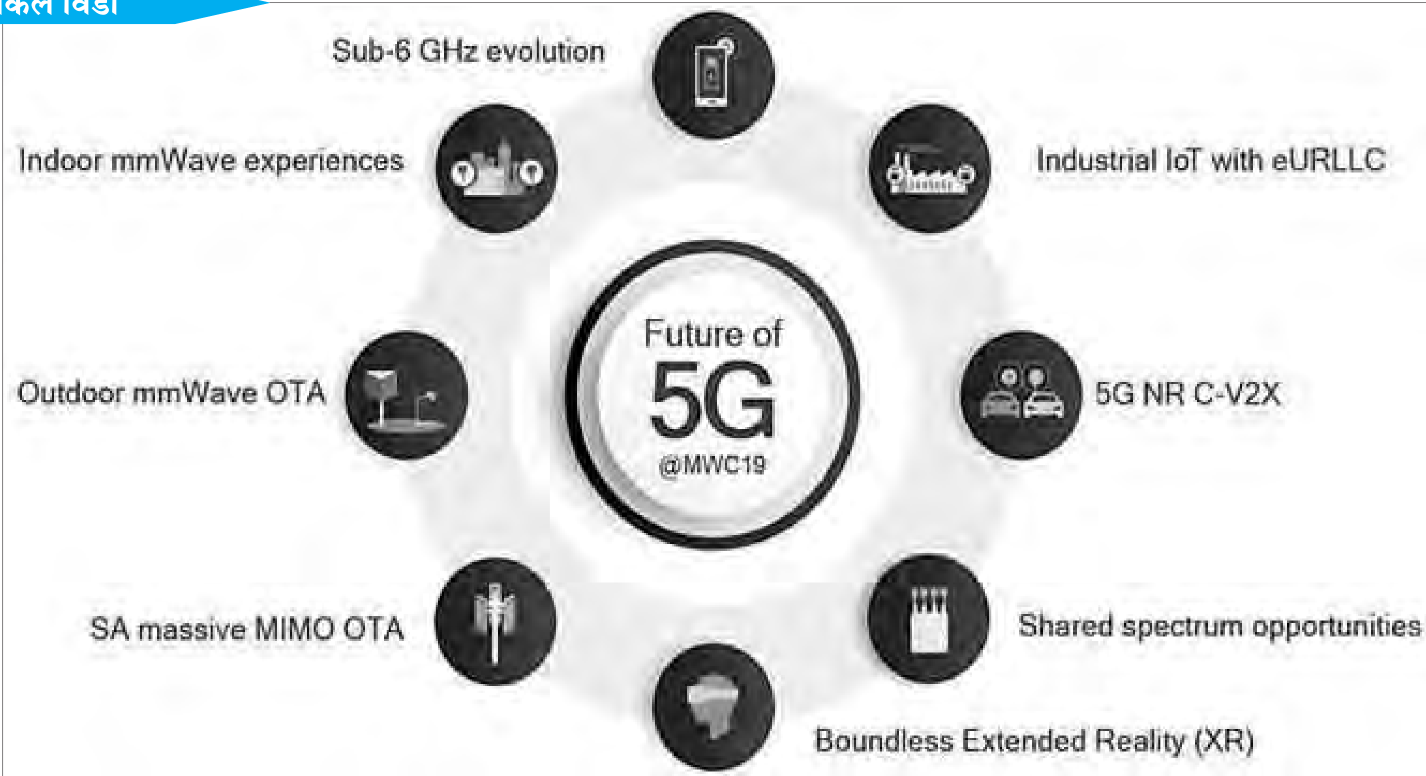

5G हमारे स्मार्टफोन को बेहतर बनाने के अलावा वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे नए अनुभवों को तेजी से कम लागत में उपलब्ध करने की सुविधा प्रदान करता है तथा उद्योगों को अति विश्वसनीय नेटवर्क सुविधा से जुड़ने का प्रयास करता है। साथ ही चिकित्सा प्रक्रियाओं को रिमोट लोकेशन से जोड़ने का भी प्रयास करता है। 5G का अर्थ डाटा रेड, पावर और मोबिलिटी में विस्तार करने की क्षमता एवं कम दाम में बेहतर कनेक्टिविटी सॉल्यूशंस उपलब्ध करवाना है।

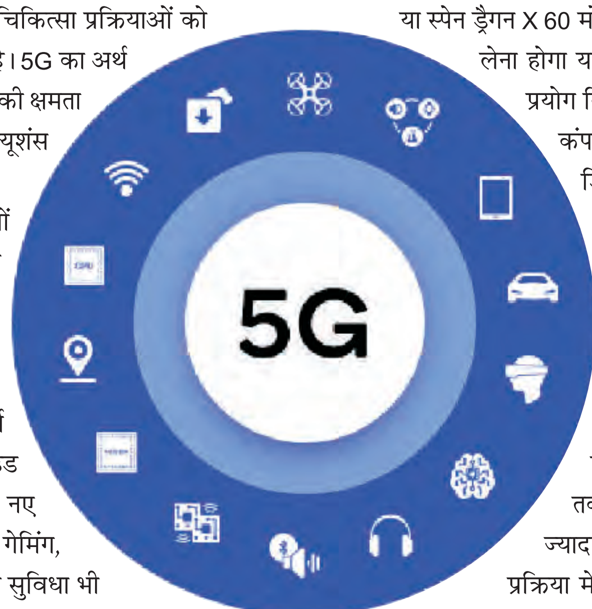

5G को विभिन्न प्रकार की विशेषताओं के साथ तैयार किया गया है, जो हमारे जीवन के कई पहलुओं को बदल देगी, जिसमें हमें तेज डाउनलोड गति, कम विलंब और कई उपकरणों को जोड़ने की क्षमता सहित उच्च कनेक्टिविटी के साथ आभासी तथा वास्तविक समय में कार्य करने की सुविधा मिलेगी। 5G आपको क्लाउड सेवाओं के साथ डाटा को सुरक्षित रखने के नए आयाम प्रदान करेगा तथा मल्टी प्लेयर क्लाउड गेमिंग, रियल टाइम एक्टिविटी और भाषाई अनुवाद की सुविधा भी प्रदान करेगा। 5G का प्रभाव व्यवसायिक क्षेत्र पर भी बहुत अधिक पड़ेगा। उच्च डाटा गति और बेहतर नेटवर्क विश्वसनीयता के साथ में व्यवसाय की दक्षता और अत्यधिक यूजर को उत्पाद की जानकारी तेजी से दी जा सकेगी तथा उन्हें व्यवसाय के साथ हर समय जोड़ा जा सकेगा। विशेष रुप से 5G स्मार्ट सिटी बनाने की दिशा में एक विशेष कदम रहेगा, जिससे कि उसमें रहने वाले लोगों के जीवनशैली को बदला जा सकें और उन्हें मुख्यधारा के साथ जोड़ा जा सके, जिसमें उनके घरों की सुरक्षा, वाहनों की सुरक्षा उनके सरकारी दस्तावेजों की उपलब्धता की सुविधा और कनेक्टीविटी तथा दैनिक जीवन में आने वाले कार्य व सरकारी कार्यों को आपस में जोड़ा जा सकेगा।

यहां पर यह जरूर कहा जा सकता है कि 5G की सेवाओं को प्राप्त करने के लिए हमें नए स्मार्टफोन या हैंडसेट को उपयोग में लेना होगा जो कि 5G की सेवाओं को समर्थित कर सकती हो। इस हेतु आपको स्नैप ड्रैगन X 55 या स्पेन ड्रैगन X 60 मोडेम- आरएफ सिस्टम द्वारा संचालित स्मार्टफोन लेना होगा या इसके समकक्ष क्षमता वाला स्मार्टफोन को भी प्रयोग किया जा सकता है। वर्तमान में कई मोबाइल फोन कंपनी 5G को समर्थन देने के लिए नए स्मार्टफोन को डिजाइन कर रही हैं।

विश्व के कई देशों में और वैश्विक मोबाइल नेटवर्क ऑपरेटरों ने 2019 में 5G नेटवर्क को लॉन्च करना शुरू कर दिया था। वर्ष 2021 तक कई देश राष्ट्रव्यापी 5G मोबाइल नेटवर्क की सेवाएं उपलब्ध करवा सकेंगे। इसके अलावा सभी प्रमुख एंड्राइड फोन निर्माता 5G फोन का व्यवसायीकरण कर रहे हैं और जल्द ही लोग 5G तक पहुंचने में सक्षम हो सकते हैं। 5G को 35 से ज्यादा देशों में बहुत तेजी से रोलआउट और अपनाने की प्रक्रिया में देखा जा रहा है। हालांकि यह अनुमान लगाना कठिन है कि कब तक सभी देशों की पहुंच में 5G होगी। हम वर्ष 2021 में 5G के भारत में लॉन्च की उम्मीद करते हैं।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक भवानीनगर
राजसमंद, मो. 97846-52469

व्यंग

मुर्गा है तो प्याज नहीं

सुनील जैन 'राही'
दिल्ली, मो. 98109-60285

आज तक किसी मुर्गे की वजह से नन्हीं सी सरकार नहीं गिरी, लेकिन राजधानी की सरकार को प्याज ने कद्दू के भाव ठिकाने लगा दिया। मुर्गे की वजह से भले ही सरकार न गिरी हो, लेकिन कोई भी पार्टी बिना मुर्गे के पूरी और सफल नहीं होती। पार्टी बनाने से लेकर मनाने तक मुर्गे ढूंढे और बनाए जाते हैं। मुर्गे ढूंढने वाले वहीं इज्जत पाते हैं, जो प्याज से बघार (छौंक या तड़के) लगाने में मिलता है। प्याज की किल्लत से उभर भी नहीं पाए थे कि मुर्गे की जान आफत में आ गई। जब भी मुर्गे की जान आफत में आती है, उसकी जान बच जाती है। मुर्गे की जान खतरे में आते ही आदमी को जान की चिन्ता होने लगती है। आदमी अपनी जान के अलावा किसी की परवाह नहीं करता। उड़ते पक्षी के नीचे टपकते ही उसकी जान का कबूतर बिलबिलाने लगता है। उसकी जान पिंजरे में बंद पक्षी में नहीं, ऊपर से टपकते पक्षी में अटकी होती है। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता जो मुर्गा बनाने और खाने में विश्वास नहीं रखते हैं।

प्याज और मुर्गे में 36 का आंकड़ा है। एक अर्श पर तो दूसरा फर्श पर। दोनों एक साथ न तो उड़ते हैं और न ही गिरते हैं। कड़कड़ाती ठंड में प्याज सस्ती तो मुर्गा जानलेवा हो गया। प्याज और मुर्गे को नवरात्र में चौराहे पर खड़े होकर बांग देने की इच्छा करती है। उसके बाद तो किचन में चिकन और चिकन से पार्टी और मास्क के भीतर से निकलती दूर तक फैलती प्याजी... सोमरस से महकती बू। यह बू बाअदब आती है, इसीलिए साहब और बाबू की प्रिय।

माउथफ्रेशनर का आधा बाजार तो प्याज खाने की वजह से है। मंत्रालय से जब प्याज की महक आने लगे तो शक सुई सरकार की ओर घूम जाती है। प्याज गरीब की झोपड़ी का गहना है तो रईस के घर में अमीरी का अहसास। किसान के घर में प्याज कद्दू की तरह दयनीय तो साहब के घर में अंगूरी की तरह बेशकीमती।

किसान मुर्गा नहीं प्याज उगाता है। प्याज गर्मी में सिकुड़ता है और किसान ठंड में। कभी सियासत के कारण तो कभी नीलगाय की वजह से। प्याज सड़ जाता है, गोदामों में बिकने के लालच में और मुर्गा पक जाता है, किसान के लटक जाने पर। किसान के लटकने से ठंड कम नहीं होती, प्याज के भाव बढ़ने से किसान अमीर नहीं हो जाता। खेत में उतनी ही प्याज होती है, जितनी होनी थी।

प्याज महंगी हो या सस्ती, मुर्गा आसमान में उड़े या आसमान से टपके, किसान के दिन जैसे थे, वैसे ही रहेंगे। मूंगफली के ढेर पर किसान सो तो सकता है, लेकिन दो मूंगफली खा नहीं सकता। मंडी में किसान की मूंगफली दस रुपए किलो और बाजार में वही कम्पनी की मूंगफली 100 सौ रुपए किलो। किसान खेत में और कम्पनी की बाई हवाई जहाज में। किसान लंगोट में तो नेता सूटबूट में। किसान सड़क पर और नेता विदेश में। किसान को प्याज के लिए मुर्गा नहीं, प्याज का उचित दाम चाहिए। उसे खुश होने के लिए कुछ पल चाहिए, अटटाहस की जागीर नहीं। दुख तो उसके पास बीघा में हैं, हंसी के लिए बस कुछ लम्हे चाहिए।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

सौर ऊर्जा के माध्यम से लागत नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण संभव : सांसद जोशी

राजसमंद. ग्लोबल वार्मिंग के इस दौर में लागत नियंत्रण के साथ पर्यावरण संरक्षण में सौर ऊर्जा सबसे बेहतरीन विकल्प है, जिसका व्यापक उपयोग समय की आवश्यकता है। उक्त विचार चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी ने राजसमंद शहर में आरके एन्टरप्राइजेज के उद्घाटन समारोह में वर्चुअल जुड़कर व्यक्त किए।

समारोह के विशिष्ट अतिथि नागौर जिला प्रमुख भागीरथ राम चौधरी, राजसमंद के पूर्व जिला प्रमुख नारायणसिंह भाटी, मार्बल गैंगसा एशोशिएशन अध्यक्ष रवि शर्मा, मधुसूदन व्यास, पूर्व प्रधान शांतिलाल कोठारी, समाजसेवी गणेश पालीवाल, हरिप्रकाश रिणवा, सुनील तापड़िया, मनीष चौधरी, पर्यावरणविद् दिनेश श्रीमाली थे। प्रारम्भ आरके एन्टरप्राइजेज के अनील खंडेलवाल, हेमंत त्रिवेदी, अजयराज खंडेलवाल, वारी के क्षेत्रीय प्रबंधक राहुल कुमार और अजयसिंह शेखावत ने पूर्ण स्वदेशी सौर ऊर्जा संयंत्र निर्माण कम्पनी वारी की विस्तार से जानकारी दी। साथ ही आमजन से आह्वान किया कि वे सौर ऊर्जा का अधिकाधिक उपयोग करें। स्वागत पुरूषोत्तम त्रिवेदी, लोकेश श्रीमाली, विधान त्रिवेदी ने किया। संयोजन युवा कवि हेमेंद्रसिंह मारवाड़ ने किया। श्री भागीरथराम जी चौधरी अपनी डेयरी के लिए 400 केडब्लू का ऑर्डर भी प्रदान किया।

परितोष
पालीवाल
82338 82818

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

1. सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट क्या है ?
2. हाल ही में 10 जनवरी को कौनसी भाषा का दिवस मनाया गया ?
3. लंबे समय से गायब सीनियर अब पति जैक मां किस कंपनी के संस्थापक हैं ?
4. मुकेश अंबानी को पीछे छोड़ कौनसा चीनी व्यापारी एशिया का सबसे धनी व्यक्ति बन गया है ?
5. आईसीसी द्वारा प्रदान किया जाने वाला गारफील्ड सोबर्स पुरस्कार इस वर्ष किसे प्रदान किया गया है ?
6. हाल ही में प्रधानमंत्री ने डेडीकेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन किया है, यह कोरिडोर किससे संबंधित है ?
7. विश्व बैंक ने हाल ही में भारत के किस राज्य में जलमार्ग के सुधार हेतु 105 मिलियन डॉलर का ऋण स्वीकृत किया है ?
8. कोविड-19 के बाद हाल ही में कौनसा फ्लू पक्षियों एवं मनुष्यों के लिए खतरा बन रहा है ?
9. भारत में कोविड-19 से सुरक्षा हेतु टीकाकरण अभियान मंगल टीका की शुरुआत कब से हो रही है ?
10. ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया ने हाल ही में भारत में सीमित आपातकालीन उपयोग के लिए कौनसी दो वैक्सीन को मंजूरी दी है ?
11. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किस शहर में भारत की पहली उन्नत हाइपरसोनिक विंड टनल (एचडब्ल्यूटी) परीक्षण सुविधा का उद्घाटन किया ?
12. भारत के किस पड़ोसी देश की संसद को हाल ही में भंग कर दिया है ?
13. भारत और बांग्लादेश चिलाहाटी हल्दीबाड़ी रेल लिंक को फिर से कब से खोलने जा रहे हैं ?
14. 20 दिसंबर को किलाऊआ ज्वालामुखी में विस्फोट हुआ। यह ज्वालामुखी कहां स्थित है ?
15. बैटरी उद्योग में अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व लिथियम की पहली रिफाइनरी भारत में कहां स्थापित की जा रही है ?

उत्तर :

1. सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट (Central Vista Project) के तहत राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट तक फैले राजपथ पर पड़ने वाले सरकारी भवनों का पुनर्निमाण या पुनर्उद्धार किया जाना है। सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत नया त्रिकोणीय संसद भवन, कॉमन केंद्रीय सचिवालय और तीन किलोमीटर लंबे राजपथ को रीडेवलप किया जाएगा।
2. हिन्दी भाषा का।

   10 जनवरी ही क्यों ? : पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में 30 देशों से प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। इस सम्मेलन की समृति में भारत सरकार ने 2006 से 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था।

   यह हिंदी दिवस के अलग कैसे है ?
   हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। क्योंकि इस दिन हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गयी थी। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी भाषा को भारत की अधिकारिक भाषा का दर्जा दिया था। विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा को प्रोत्साहन दिया है, जबकि हिंदी दिवस को केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही मनाया जाता है।

   हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए संवैधानिक प्रावधान हिंदी विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। संविधान के अनुच्छेद 120, 210, 343, 344 तथा 348-351 द्वारा हिंदी भाषा के प्रोत्साहन पर बल दिया गया है।
3. अलीबाबा
4. झोंग शानशान (बोतलबंद पानी बनाने वाली कंपनी नोंगफूंस्प्रिंग्स के संस्थापक)
5. विराट कोहली को (दशक के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में चयनित)।
6. रेलवे से (मालगाड़ी के लिए समर्पित कोरिडोर)
7. पश्चिम बंगाल के लिए
8. बर्ड फ्लू
9. 16 जनवरी 2021 से
10. यह दो टीके COVAXIN और COVISHIELD हैं। COVAXIN; भारत बायोटेक और ICMR (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) द्वारा विकसित कोविड-19 वैक्सीन है। यह देश में विकसित होने वाला पहला स्वदेशी कोविड-19 वैक्सीन है।
11. हैदराबाद में।
12. नेपाल की।
13. हल्दीबाड़ी पश्चिम बंगाल में है, जबकि चिलाहाटी बांग्लादेश में है। भारत- बांग्लादेश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा हल्दीबाड़ी से 4.5 किलोमीटर और चिल्हाटी से 7.5 किलोमीटर दूर है।

    इस रेलवे लिंक को 17 दिसंबर 2020 को एक आभासी द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के दौरान खोला गया। वर्ष 1965 के भारत और पाकिस्तान युद्ध के दौरान इस रेलवे लिंक को काट दिया गया था।
14. अमेरिका के हवाई में।
15. भारत की पहली लिथियम रिफाइनरी गुजरात में स्थापित की जाएगी।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

झूठ की आत्मकथा सच की कलम से

दरबार में बुलावा तमाम लोगों को नसीब की बात लगता होगा। मुझे समझ ही नहीं आया चिंता होने लगी शामत आई कि कयामत आने वाली है। सबने कितनी बार हिदायत दी थी, सच कहना लिखना इस युग में ठीक नहीं है, पर मुझसे झूठ की महिमा गाई नहीं जाती। सर कटाना मंज़ूर झुकाना नहीं सत्ता की चौखट पर। दिल्ली का हो या कहीं और शहर राज्य की राजधानी का खुला दरबार, चाहे बंद दरवाज़े की महफिल। नहीं गए, बुलावा भी नहीं मिला कभी। कहां गया बेहद महत्वपूर्ण लेखकीय कार्य की खातिर आपकी सेवा की ज़रूरत है अवश्य पधारें। जो भी होगा, देखा जाएगा सोच कर हाज़िर हुए, मगर आदत है। सर नहीं झुकाया, नमस्कार कहकर सामने बैठ गए। चाय पिलाने को पूछा उनकी चाय का कहते हैं, जवाब नहीं। जिसने एक प्याली पीकर देखी, याद रही और चाय की चाहत उनके पास ले जाती रहती है। मैंने कहा- नहीं, मुझे इच्छा नहीं है। चाय ठंडा की औपचारिकता छोड़ बताएं, मुझसे क्या बात लिखानी है। उन्होंने सोने चांदी के कलम सामने रखकर समझाया ऐसी कलमों से नवाज़ा जाएगा आपको, हमारी आत्मकथा लिखनी है।

मैंने बताया ये काम कथाकार, इतिहासकार का है, मैं तो व्यंग्यकार हूं। तीखी बात लिखना आदत है और उन लिखने वालों में से हर्गिज़ नहीं जो सरकारी ईनामात की चाहत में सत्ता की कीमती कलमों से जो गरीबों के लहू से भरी होती हैं, शासकों का गुणगान करने वाला इतिहास लिखते हैं और शोहरत की बुलंदी को छू लेते हैं। मेरे पास इक आईना है, जिसमें हर किसी की असली सूरत दिखाई देती है। दर्पण झूठ न बोले हंस ले चाहे रो ले।

जाने क्या सोचकर सरकार ने मुझे अति गोपनीय निजी कक्ष में चलने को कहा और बोले लेखक जी चिंता मत करो। जैसे निडरता पूर्वक बात कही है, उसी तरह मुझे अपना आईना दिखलाओ अकेले में। कहने लगे मैंने कैमरों का कमाल बहुत देखा है, शौकीन निजाज़ लोग रंगीन शानदार महंगे लिबास पहनकर तस्वीर बनवाते हैं हसीन। महिलाओं की तरह अपनी सुंदरता पर लट्टू हो जाते हैं। सभी को लगता है ऊपरवाले ने मुझसे बढ़कर खूबसूरत कोई दुनिया में नहीं बनाया है। मगर सच का आईना सुनते रहे हैं, असलियत दर्शाता है। अपने आप को कोई देख नहीं सकता और बाज़ार में आजकल वहीं आईने मिलते हैं, जो बिकते हैं और खरीदार को बड़ा खूबसूरत बतलाते हैं।

सोशल मीडिया, टीवी, अख़बार जैसे झूठे दर्पण मैंने भी खरीद कर अपनी महिमा का गुणगान करवाया है। शोहरत हासिल की है, मगर जाने क्यों कभी कभी अपने को नींद में देखकर पसीने पसीने हो जाता, डरावना ख्वाब जब नींद छीन लेता है। पहली बार उन्होंने शपथ खाई सच को सुनकर संयम नहीं खोने का वादा किया।

मैंने सच दिखाना शुरू किया, सत्ता पर तमाम तरह के लोग होते रहे हैं। गंभीर स्वभाव वाले दर्द की बात सोचने वाले निराशा को आशा में बदलने के जीवट वाले और शाही ढंग से राजा बनकर बंसी बजाने वाले भले देश आग की लपटों में घिरा हो। लेकिन जैसे आजकल लोग मनोरंजन और समय बिताने को ऐसे टीवी शो सीरियल और फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिनमें कोई ज़िंदगी और समाज की गंभीर चिंतन की बात नहीं हो, बस हंसने ठहाके लगाने की बात हो। बेशक घटिया बेहूदा चुटकले हों या गंदी अश्लील हरकतों को देखकर मज़ाक़ के नाम पर नग्नता को बढ़ावा देना। ऐसे में आप मिले जो दिल खुश करने वाली अच्छी अच्छी बातें कहने का हुनर जानते हैं। हास्य कलाकार की सफलता इसी में होती है कि लोग उसकी झूठी बेबुनियाद कही बात को भी सच समझते हैं। बच्चे स्कूल नहीं जाना चाहते, तभी पेट दर्द होने लगता है। लगता है मेरे भाई की तरह आपकी आदत होगी बचपन में अगर पढ़ाई की हो तो। हास्य विनोद जीवन में ज़रूरी है, मगर आपने हर चीज़ को मज़ाक बनाकर ठीक नहीं किया है।

चार्ली चैपलिन की उलटी सीधी हरकतें दर्शक को हंसाती थीं, मगर आपने हर कीमती चीज़ से लेकर संसाधन संस्थाओं संगठन तक को तहस नहस किया है और समझते हैं कितना मज़ा आया है। ये उपहास की नहीं, समाज की चिंता की बात है।

खोटे सिक्के की कहानी है, जिसे पिता ने संभालकर तिजोरी में इक थैली में रख छोड़ा था। किसी को ठगना नहीं, धोखा नहीं देना और शर्मिंदा नहीं होना। किसी को देकर उससे धोखेबाज़ कपटी नहीं कहलाना, पसंद नहीं था। मोह छोड़ नहीं सकते थे, बेटा बेटा होता है, चाहे खोटा सिक्का ही हो। कितने खोटे सिक्के शादी के बाज़ार में मुंह मांगे दाम पर बिकते हैं। बेटी देने वाले पछताते हैं, मगर दामाद और बेटी की ससुराल का समंध निभाने को खामोश रहना पड़ता है। चुनाव में गलती जनता से हो जाती है, नेता पहले सेवक बनने की बात कहते हैं। जीत कर शासक समझने लगते हैं। जनता भरोसा करती है, नेता कपट करते हैं। बात से मुकर जाते हैं। आत्मकथा लिखना आसान नहीं है, खुद को सच्चाई के आईने में देखकर लोग सोचते हैं, ये मैं नहीं कोई और है। मगर शायद आपकी आत्मकथा का शीर्षक मैं सुझा सकता हूं। विश्व के सबसे बड़े बहरूपिये का शासन। हमने इकरार नहीं किया, उन्होंने भी इसरार नहीं किया। उन्होंने कोई चमत्कार नहीं किया, अलविदा करते समय नमस्कार नहीं किया, ये अत्याचार नहीं किया। फिर मिलने की कोई तारीख नहीं तय की, फिर भी शायद बात आधी अधूरी है, इक और मुलाक़ात ज़रूरी है।

डॉ लोक सेतिया
फ़तेहाबाद हरियाणा, मो. 9416792330

कोरोना रो जबरी जाळ, फस्या गैरकी गेरुलाल

गैरकी न गेरु लाल लारे- लारे काम करता हां। एक ई कमठाणा पे, वा मजूरणी न वो कारीगर। कमठाणा बदलता रिया, पण दोयां रो जोड़ो नी टूटो। वो काम करवा में हूंसियार हो, अणी कारणे काम आगे ऊं आगे वणी री वाट जोवता रेता। सब ई ठेकेदार केवता के गेरुलाल जसी कारीगरी कठैईस देखवा में नी आई। वणी रे हाथ में रामजी कळा देई न भोमका पे मेल्यो है। वो सब काम करी लेतो हो। चणाई वो के वेलदारी, फरसी रो काम वो के पलास्तर, कांस्या री पट्टियां छावणी वो,सब काम ठाबंदी ऊं करतो। पावड़ा- तगारी, गैंती-हाबळां, करणी- हावल, मिस्तर- बटकड़ा सब वणी रा रास हा। वणी ने आज तलक काम रे लेखे कणी बी ओळीम्बो नी दीदो। वणी री एक ई सरत ही। म्हारे मजूरनी गैरकी ईस सावे पछे भलेई मूं घड़ी खाण वत्तो काम बी करी लेऊं तो बी मजूरी में एक पावली वत्ती नी लेऊंला। ठेकेदार न घरधणी दोई राजी। गैरकी पाव घड़ी रेम्बो परो लेती तो बी गेरूलाल मसाला री तगारी पायड़ पे मेलीन चणाई करवा लागतो, ईंटा- भाटा बी माथा पे लियावतो न पड़तल परी अवेरतो।

धीरे- धीरे वे दोई दूजा कारीगर न मजूरां री आंख में खटकवा लागा। गैरकी रूपाली ही। साइर (शायर) लोगां री बोली में केवो तो ऊपर वाले वणी ने फुरसत में वणाई ही। रूपाळपणा रे आगे तो वा कणी ने धारती नी ही। कियो बी है के खुदा जदी 'हुसन' देवे, तो 'नजाकत' आई जावे है। वा काजळ- टीली न कांच- कांगसियो अमट लारे राखती। मौको लागताई कांच में मूंडो देखवा लागती। नत दन नवा- नवा घाघरा, ओढ़नी पेरती। हाथ में नवा- नवा रुमाल। रोज दन पगां में नवा चम्पल। डील पे होना री रकमां ऊं नीचे वात नी। कठे ई मेळो भरतो तो हमजो वणी दन दोयां री छुट्टी। दोई आखो दन मेळा में मजा करता। डोलरां में हिन्दा खावता। सनीमा देखता न हंज्या वेळा रा आप आपरे घरे। कमठाणा रा दूजा कारीगर गैरकी ने काम वताइन तो देखो पाछे कसीक लेवियां तले वणारी।

गेमे- गेमे या खबर दोयां रे गाम हुदी पोंची। अबे तो दोयां रे कबकी वीती। लारे आवणा जावणा काम करणा हेंग बंद। गेरू लाल न गैरकी दोई कुंवारा हा, पण हा न्यारी- न्यारी जात रा। अठीने कोरोना आव रे परो। काम- धंधा काई घर बारणे निकळणो तकात बंद। अबे तो दोई पंखेरू मइने रा मइने ईस घणा घोटावा लागा। मलवा रा ई सांसा पड़ी गिया। एक- एक घड़ी काटणी मसकल वेई गी। मोबाइल रो आसरो हो जणीऊं थोड़ा क दन काड्या। मोबाइल रो बेलेंस खूटवा आयो, तो मन में ठाड वळी। एक दन दोयां हरत कीदी। आपां तो नाई जावा अणी कैद ऊं। यूं छेटी छेटी रेवाऊं कीकर पार पड़ेला। गैरकी अठीने दकी वेईरी न गेरू लाल वठीने। गैरकी दन- दन थाकवा लागी, मुंडो कमलावा लागो तो बाई- दादा रे मन में काई रा काई वच्यार आवा लागा। वणा ने भेम वीयो के वे नी वे सोरी रे डील में हाज मांद वळी गी है। गैरुलाल री दसा बी अलग नी ही, मान्दगी दोई आड़ी बरोबर जोर देई री ही।

धीरे- धीरे आखा मलक में कोरोना नाम री बेमारी फैली गी। काई दल्ली न काई मम्बोई, मजूर मनख, लगायां न नाना मोटा टाबर पगे- पगे सैराऊं आप आपरे गाम जावा लागा। सबां रा काम- धंधा सब बंद वेई गिया। सिरकार कियो के जो जठे है वठेइस रेवेला दूजूं पुलिस वाळा डंडा मेलेला। वणारे खावा पीवा रो काईस बन्दोस नी वेवाऊं मनख पगेई गेले परा विया।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

भूख ऊं मरवा ऊं तो गाम जाईन कोरोना ऊं मरणो फेर बी ठीक लागो वणाने। ढार री ढार हजारों न मनख सड़कां पे चालवा ढूका। कोई रेल री पटरी रे लारे- लारे रवाना विया। घणा- खरा साइसिकलां रा असवार विया। नी खावा री हूद नी पीवा री हूद। नी मांदगी री दवायां। गांठड़ी में फोरो मोटो सामान लेईन ऊब-ताळ में गेले विया परा।

मौको देखीन गैरकी न गैरुलाल दोई दूध में पाणी मले ज्यूं भीड़ भेळा वेई गिया। मनखां रे टोळा रे लारे- लारे चालवा लागा। गेला में खावा रो काई क तो मल्यो रेई, जो दूजा मनख खावेला वोई आपां बी खाई लेवालां। गैरुलाल मोटर साईकल नी लायो। चालता-चालता पेंटरोल ख़तम वेई जावे तो कठाऊं भरावे। सब आड़ी पेंटरोल पम्प तो बंद हा। पछे गेला में मोटर साईकल कणीरे भरोसे मेले। मोटर साइकिल रा नंबर ऊं तो फेर पकड़ाई में बी आई सके।

दोई हाथ में हाथ लेईन अणजाणी डगर पे चालता रिया। दन में चालता न रैण में मल्यो जस्यो हिरामण- पाणी करीन हुई जाता। कदी- कदी सनीमा रा हीरो- हीरोइण ज्यूं गाणा बी गावता- हम दोनों दो प्रेमी दुनिया छोड़ चले..., जीवन की हम सारी रस्में तोड़ चले....।

मनखां रे लारे- लारे चालता लगा एक मीनो कठेई निकळी गियो। वणाने गतागम ई नी पड़ी के कणी दसा में न कतरा छेटी जाई पूगा। ज्यूं- ज्यूं मनख वणारे ठाम- ठकाणे पूगवा लागा ज्यूं- ज्यूं संग रो साथ कम पड़वा लागो। आखिर में वे दोई एकला रेई गिया तो काईस हूजना नी हूजी। दन में तारा दीखवा लागा। हे राम... अबे काई वेई। काजळ- टीली, लाली, पोडर, कांगस्या सब कठेई गिया, न रोटा रा वांदा पड़वा लागा।

अबे पाछा कीकर जावे। जावे तो गेला री नंगे कणीने। घाणी रा बळद ज्यूं आंख्यां पे पट्टी बांधी न सौर-बदी में घणा छेटी आया तो परा पण अबे जावा री घणी अबकी घाटी। हज़ारों न मनखां री भीड़ कठेई गमाई गी। सड़क पे वे दोई जणा हा, कोरे मेरे कोईस नी। छेटी- छेटी मनख रो जायो नी। यो तो जोरदार लपेड़ो फस्यो। अबे पुलिस वाळा पकड़ी न जेळ में जमा पाड़ेला न अणगणती रा होटा मेलेला जो न्यारा। अबे तो हारी पोल खली जाणी है। या तो घणी अबकी आंटी फसी। घर- गाम वाळा बी चुकवा वाळा नी है। कठीनेईस जावा ज्यूं नी रिया। एक आड़ी कूड़ो न एक आड़ी खाई।

मोबत कीदी तो परी पण मोबत में अस्या दन बी देखणा पड़ेला, या कणीने ठा ही। मोबत करवा वाळा ने दनिया होरे हा कदी रेवा दीदा है, जो आज रेवा देवेला। दखी वेईन रोवता लगा दोई पाछो गाणो गावा लागा- आसिकी इम्तियान लेती है... आसिकों की जाण लेती है...।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
आचार्य आरएनटी मेडिकल
कॉलेज, उदयपुर

जनता के आत्मविश्वास व कर्तव्यों से लोकतंत्र में अधिकार स्वतः प्राप्त होंगे : अनंत गणेश त्रिवेदी

राजसमंद. राष्ट्रीय चुनाव सुधार के अंतर्गत **स्वर्णिम राजसमंद नवनिर्माण अभियान** का उद्घाटन गांधी सेवा सदन सभागार में मुख्य अतिथि शांति पीठ भारत संस्थान के संस्थापक सचिव आनंद गणेश त्रिवेदी, लोक अधिकार मंच प्रदेशाध्यक्ष एडवोकेट संपतलाल लड्ढा, नगर विकास समिति सचिव भगवत शर्मा, बाल कल्याण समिति अध्यक्ष भावना पालीवाल तथा एडवोकेट मोतीसिंह राणावत के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ। उद्घाटन सत्र में अतिथियों ने मतदाता जागरण बैनर एवं स्वर्णिम राजसमंद नव निर्माण जनमत अध्ययन तालिका का विमोचन किया।

उद्घाटन सत्र में विषय प्रवर्तन करते हुए आयोजन सचिव एडवोकेट भरत कुमावत ने बताया कि चुनाव सुधार अभियान के अंतर्गत 5 चरणों में 16 से 31 जनवरी तक अभियान चलाया जाएगा। प्रथम चरण में कॉन्फ्रेंस के तहत विभिन्न विषय एवं विशेषज्ञों द्वारा सेमिनार आयोजित कर जनमत निर्माण किया जाएगा। चरण में प्रत्याशियों के बौद्धिक सशक्तिकरण के लिए 5 चरणों में मूल्यांकन एवं कार्यशाला साक्षात्कार आदि आयोजित होंगे। तृतीय चरण में मतदाता जागरण अभियान के अंतर्गत परीक्षा दो, परीक्षा लो कार्यक्रम आयोजित होगा। चतुर्थ चरण में राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों द्वारा राजनीतिक वार्ता का आयोजन किया जाएगा। पांचवें एवं अंतिम चरण में चुनाव पश्चात मतदाता एवं बुद्धिजीवी सर्वे अध्ययन तथा स्वर्णिम राजसमंद नवनिर्माण के मास्टर प्लान का लोकार्पण नवगठित बोर्ड को हस्तांतरित करके सभी पार्षदगणों के लिए प्रशिक्षण कॉन्फ्रेंस का आयोजन होगा।

उद्घाटन सत्र के बाद जनमत निर्माण कॉन्फ्रेंस लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में समग्र चुनाव सुधार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय वर्तमान लोकतांत्रिक चुनौतियां और सामाजिक संगठनों संस्थाओं की निदानात्मक भूमिका पर मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथि अतिथियों ने उद्बोधन दिया।

अभियान के संयोजक और आयोजन समिति सचिव एडवोकेट भरत कुमावत ने बताया सेमिनार के मुख्य वक्ता अनंतगणेश त्रिवेदी ने वर्तमान लोकतंत्र की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वास्तविक लोकतंत्र देश में तभी आएगा, जब देश में लोगों को असली आजादी मिलेगी। आज के देश के हालातों में जनतंत्र पर राजनीतिक एवं उच्च प्रशासनिक वर्ग हावी है। लोकतंत्र की स्थापना के लिए आत्म शुद्धि की सर्वोच्चता को इंगित करते हुए द्विवेदी ने कहा की जनता की निर्भीकता और आत्मविश्वास स्वस्थ लोकतंत्र का प्रथम पायदान है। त्रिवेदी ने कहा जब नागरिक अपने कर्तव्यों की पूर्ति ईमानदारी से करने लग जाएंगे, तब उन्हें अपने अधिकार पुत्र प्राप्त होने लगेंगे।

विशिष्ट अतिथि भगवत शर्मा ने वर्तमान व्यवस्थाओं पर भारी रोष व्यक्त करते हुए कहा कि आज आम जनता की सुनवाई करने वाला यहां कोई नहीं है, नेता एवं अधिकारी सार्वजनिक कार्यक्रमों में जैसी बातें करते हैं, वैसा व्यवहार में नहीं करते एवं आम लोगों में नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों से बात शक करने में भय लगता है। विशिष्ट अतिथि एडवोकेट भावना पालीवाल ने कहा की लोकतंत्र की बालक होते हैं, जो देश के भविष्य निर्माता होते हैं और आज देश में बालकों के प्रति अपराध कुपोषण एवं शोषण अत्यधिक बढ़ गया है, जिसके निदान करना सर्वाधिक आवश्यक है।

विशेष अतिथि मोतीसिंह राणावत ने मेवाड़ उज्जवल गौरवशाली इतिहास का हवाला देते हुए बताया कि आज तंत्र लोक पर हावी है और जनता को अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए न्यायपालिकाओं के दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं। कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन आयोजन समिति संरक्षक गणेशलाल कुमावत एवं धन्यवाद आयोजन समिति अध्यक्ष कन्हैयालाल त्रिपाठी ने किया।

नूतन वर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएं

मास्क को हटाने के बाद अपने हाथों को साबुन और पानी या अल्कोहल युक्त हैंड रब से धोएं। प्रयोग किये गये मास्क को किटाणु रहित कर बंद कूड़ेदान में डाल दें, मास्क को पहनने के बाद उसे छूने से बचें।
मास्क को गर्दन में लटकता हुआ ना छोड़ें। दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी

कन्हैयालाल करोतिया

शारीरिक शिक्षक मो. 9784624255

"SHREE" Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

शहर की सबसे पहली, सबसे बड़ी एवं सबसे सुविधा युक्त लाइब्रेरी (रीडिंग-जोन)

लेकसिटी लाइब्रेरी (रीडिंग-जोन)

सीमित सीटें! पहले आएं.... पहले पाएं....

सुविधाएं

- गर्मी में एसी व सर्दी में हीटर की सुविधा।
- बिल्कुल साउंड प्रुफ स्टडी स्पेस
- आर.ओ. पेयजल की सुविधा
- शब्दकोश व प्रमुख पत्रिकाएं
- प्रत्येक विद्यार्थी हेतु सुविधाजनक टेबल व स्टडी की आवश्यकता को ध्यान रखके विशेष रूप से बनवाई गई उपयुक्त कुर्सियां
- प्रत्येक सीट पर मोबाइल व लैपटॉप हेतु चार्जिंग पॉइंट
- फ्री रोजगार समाचार
- प्रमुख समाचार पत्र प्रतिदिन
- वाहन पार्किंग व्यवस्था
- लड़के-लड़कियों के अलग-अलग बैठने की व्यवस्था
- सीसीटीवी की देखरेख में सुरक्षित माहौल का आश्वासन
- 5, 8, 10 व 16 घंटों की अलग-अलग मनवांछित शिफ्टों में पढ़ाई करें

लाइब्रेरी में पढ़कर सेलेक्शन होने पर 2100/- की सम्मान राशि से मैनेजमेंट द्वारा चयनित लाइब्रेरी सदस्य का अभिनंदन

यहां आप...

- सरकारी, बैंक, सी.ए. इत्यादि सभी तरह की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं
- विद्यालय स्तर की बोर्ड परीक्षाओं की सेल्फ स्टडी कर सकते हैं
- अपने साथ लाए उपन्यास व अन्य साहित्य का शांत व सुविधाजनक माहौल में पठन कर सकते हैं
- यदि आपका बिजनेस या नौकरी लैपटॉप पर काम करने से संबंधित है तो बिजनेस या नौकरी का संचालन कर सकते हैं
- ऑनलाइन रिसर्च व शोधलेखन संबंधी कार्य कर सकते हैं
- यदि आप लेखक हैं तो यहां के शांत व एकाग्रचित वातावरण में अपनी रचनाओं का लेखन कर सकते हैं

'महादेव' बांडियानाला के पास, पुलिस थाने के सामने, भीलवाड़ा रोड़, कांकरोली, जिला-राजसमंद (राज)

अधिक जानकारी के लिए तुरंत संपर्क करें

अंकित चंद्रशेखर (निदेशक) मो. 9828741762, 8619632576

TMG

The Marutinandan Grand

LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA

The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001

www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729-18138
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To